Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ


वर्ष- 6
अंक- 30

मूल्य
575 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

# बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

18 ज़विल हज्ज 1442 हिज्री कमरी 29 वफा 1400 हिज्री शम्सी 29 जुलाई 2021 ई.


## अल्लाह तआला का आदेश

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوا الَّذِيْنَ اتَّخَذُوْا دِيْنَكُمْ هُزُوًا وَّلَعِبًا مِّنَ الَّذِيْنَ اُوْتُوا الْكِتٰبَ مِنْ قَبْلِكُمْ وَالْكُفَّارَ اَوْلِيَاۤءَ وَاتَّقُوا اللّٰهَ اِنْ كُنْتُمْ مُّؤْمِنِيْنَ

(सूरत अन्निसा आयत : 174)

अनुवाद :हे वे लोगो जो ईमान लाए हो। उन लोगों में से जिन्हें तुम से पहले किताब दी गई उनको जिन्होंने तुम्हारे दीन को हंसी ठट्ठाऔर खेल तमाशा बना रखा है और कुफ़्फ़ार को अपना दोस्त न बनाओ और अल्लाह से डरो यदि तुम मोमिन हो।

## अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

## आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की नसीहतें

### ज़कात गरीबों का हक़

(1395) हज़रत इब्ने अब्बास रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हज़रत मआज़ रज़ियल्लाहु अन्हु को यमन की तरफ़ भेजा और फ़रमाया : उन्हें इस शहादत की तरफ़ दावत दो कि अल्लाह के अतिरिक्त कोई उपास्य नहीं और यह कि मैं अल्लाह का रसूल हूँ। अत: यदि वे यह मान लें तो फिर उन्हें (यह) बताओ कि अल्लाह तआला ने उन के लिए रात-दिन में पाँच नमाज़ें फ़र्ज़ की हैं। यदि वे इस को भी मान लें, फिर उन्हें बताओ कि अल्लाह तआला ने उन पर उन के मालों में सदक़ा भी फ़र्ज़ किया है जो उन के मालदारों से लिया और उनके ज़रूरतमंद की तरफ़ लौटाया जाएगा।

### वे कर्म जो जन्नत में ले जाए

(1396) हज़रत अबू अय्यूब रज़ियल्लाहु अन्हु से रिवायत है कि एक व्यक्ति ने नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से कहा : मुझे कोई ऐसा काम बताएं जो मुझे जन्नत में ले जाए। लोगों ने कहा : उसे क्या हुआ है? उसे क्या हुआ है? (अर्थात इसके पूछने की क्या आवश्यक है?) नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया : बहुत बड़ी आवश्यक है। (तुम्हें चाहीए कि) अल्लाह की इबादत करो और उस के साथ किसी को भी शरीक न ठहराओ और नमाज़ सँवार कर अदा करो और ज़कात दो और सिला रहिमी (दया) करो।

(बुख़ारी, भाग 3 किताब अल् ज़कात, प्रकाशन 2008 क़ादियान)

## रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत ख़त्म होने से यह अभिप्राय है कि क़ुदरती रूप से पर आप पर नबुव्वत के कमालात ख़त्म हो गए।

अर्थात वे समस्त विभिन्न कमालात जो आदम से लेकर मसीह इब्न-ए-मरियम तक नबियों को दिए गए थे। किसी को कोई और किसी को कोई। वे सब के सब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जमा कर दिए गए

## उपदेश सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम

**आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का स्थान ख़ातम अलन्नबयन**

हमें अल्लाह तआला ने वह नबी दिया, जो ख़ातमुल-मोमिनीन, ख़ातमुल आरफीन और ख़ातमन्नबिय्यीन है और इसी तरह पर वो किताब इस पर नाज़िल की जो समस्त किताबों का सार और ख़ातमुल कुतब है। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जो ख़ातमुन्नबिय्यीन हैं और आप पर नबुव्वत ख़त्म हो गई। तो यह नबुव्वत इस तरह पर ख़त्म नहीं हुई जैसे कोई गला घूँट कर ख़त्म कर दे। ऐसा ख़त्म सम्मान के योग्य नहीं होता, बल्कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर नबुव्वत ख़त्म होने से यह अभिप्राय है कि क़ुदरती रूप से पर आप पर नबुव्वत के कमालात ख़त्म हो गए। अर्थात वे समस्त विभिन्न कमालात जो आदम से लेकर मसीह इब्न-ए-मरियम तक नबियों को दिए गए थे। किसी को कोई और किसी को कोई। वे सब के सब आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम में जमा कर दिए गए और इस तरह आप अपने आप ख़ातमुन्नबिय्यीन ठहरे और ऐसा ही वे समस्त शिक्षाएं , वसीयतें और मआरिफ़ जो विभिन्न किताबों में चले आते हैं, वे क़ुरआन शरीफ़ पर आ कर ख़त्म हो गए और क़ुरआन शरीफ़ ख़ातमुल कुतुब ठहरा।

**हम सम्पूर्ण विवेक से रसूलुल्लाह को ख़ातमन्नबिय्यीन मानते हैं**

इस स्थान पर यह भी याद रखना चाहिए कि मुझ पर और मेरी जमाअत पर जो यह आरोप लगाया जाता है कि हम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमन्नबिय्यीन नहीं मानते। यह हम पर महान दोषारोपण है। हम जिस विश्वास, मार्फ़त और विवेक के साथ आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमुल अंबिया मानते और विश्वास करते हैं, इस का लाखवां हिस्सा भी वे नहीं मानते। और उनका ऐसा साहस ही नहीं है। वह इस हक़ीक़त और भेद को जो ख़ातमलअंबिया सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की ख़त्म नबुव्वत में है, समझते ही नहीं हैं। उन्होंने सिर्फ बाप दादा से एक शब्द सुना हुआ है और इस की हक़ीक़त से अज्ञान हैं और नहीं जानते कि ख़त्म नबुव्वत क्या होता है और इस पर ईमान

शेष पृष्ठ 10 पर

## तौहीद (एकेश्वरवाद) और शिर्क का काल संसार पर आता रहता हैं और एकेश्वरवादी कौमें मुशरिक हो जाती हैं। सदैव तौहीद (एकेश्वरवाद) का काल शिर्क के काल से पहले होता है, इस असल के अंतर्गत तौहीद (एकेश्वरवाद) को इल्हामी और शिर्क को पतन का एक स्थान स्वीकार करना पड़ता है।

सय्यदना हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु सूर: इब्राहीम आयत नंबर 36 وَاِذْ قَالَ اِبْرٰهِيْمُ رَبِّ اجْعَلْ هٰذَا الْبَلَدَ اٰمِنًا وَّاجْنُبْنِيْ وَبَنِيَّ اَنْ نَّعْبُدَ الْاَصْنَامَ की तफ़सीर में फ़रमाते हैं

इस दुआ से ज्ञात होता है कि हज़रत इब्राहीम अलैहिस्सलाम इस बात का ज्ञान रखते थे कि मक्का के क्षेत्र में शिर्क फैलने वाला है। तभी तो उन्होंने दुआ की कि ख़ुदाया मुझे और मेरी औलाद को शिर्क से एक तरफ़ रखियो। अन्यथा जिस वक़्त दुआ की गई थी मक्का में शिर्क का नाम-ओ-निशान नहीं था। केवल हज़रत इसमाईल अलैहिस्सलाम का घर आबाद था या वे लोग बस्ते थे जो उनके अधीन थे।

इस दुआ से यह भी ज्ञात होता है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) और शिर्क के काल संसार पर आते रहते हैं और एकेश्वरवादी कौमें मुशरिक हो जाती हैं और मुशरिक एकेश्वरवादी हो जाती हैं और तौहीद (एकेश्वरवाद) के उच्च स्थान पर पहुंची हुई क़ौम के विषय में भी नहीं कहा जा सकता कि अब वह शिर्क के प्रभाव से सुरक्षित हो गई हैं। इस शिक्षा से इस विचार का खण्डन होता है जो मुवाज़ना मज़ाहिब वाले लोग प्रस्तुत करते हैं। अर्थात तौहीद (एकेश्वरवाद) शिर्क से तरक़्क़ी करते करते पैदा होती है। क़ुरआन-ए-करीम से ज्ञात होता है कि तौहीद (एकेश्वरवाद) के बाद शिर्क और शिर्क के बाद तौहीद (एकेश्वरवाद) के दौर आते रहते हैं और सदैव तौहीद (एकेश्वरवाद) का दौर शिर्क के दौर से पहले होता है। इस असल के अंतर्गत तौहीद (एकेश्वरवाद) को इल्हामी और शिर्क को पतन का एक स्थान स्वीकार करना पड़ता है। विपरीत मवाज़न मज़ाहिब वालों के सिद्धांत के

शेष पृष्ठ 12 पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

# प्रश्न उत्तर

## सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला

## बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले महत्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर (प्रथम भाग)

**मर्द Well Dressed उस वक़्त कहलाता है जब उसने ट्राओज़रज़ पूरे पहने हों, कोट पहना हो, टाई लगाई हो**
**और महिलाएं को कहते हैं कि तुम Well Dressed उस वक़्त होगी, जब तुमने मिनी स्कर्ट पहनी हो, यह फ़लसफ़ा मुझे समझ नहीं आया**
**महिलाऐं जो अपने आपको नंगा करती हैं, अपनी बेइज़्ज़ती करवाती हैं, अहमदी लड़की, अहमदी महिलाएं का सम्मान इसी है कि**
**अपनी लज्जा को क़ायम करे क्योंकि असल वस्तु लज्जा है और यह लज्जा है जो दूसरों को तुम्हारे पर ग़लत नज़र डालने से रोकती है**

**नोट : सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमिनीनन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ विभिन्न वक़्तों में अपने लेखों और एम.टी.ए के विभिन्न प्रोग्रामों में महत्वपूर्ण विषयों के बारे में जो आदेश फ़रमाते हैं, उनमें से कुछ पाठकों के लाभ के लिए अलफ़ज़ल इंटरनैशनल के धन्यवाद के साथ प्रकाशित किए जा रहे हैं।(सम्पादक)**

**प्रश्न : महिलाएंओं के निर्धारित दिनों में क़ुरआन-ए-करीम के लिखित नुस्खे को पकड़ने और पढ़ने तथा कम्पयूटर या आईपैड इत्यादि से तिलावत क़ुरआन करने के बारे में एक व्यक्ति ने विभिन्न ओलामा-ओ-फ़ुक़हा के हवालाजात पर आधारित एक शोध हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रस्तुत कर के इस विषय के बारे में हुज़ूर अनवर से मार्गदर्शन चाहा।**

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने अपने तिथि 05 अक्तूबर 2018 ई. में इस का निमंलिखित उत्तर अता फ़रमाया। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल ने फ़रमाया :

**उत्तर :** इस विषय पर ओलामा और फ़ोकाहा में मतभेद पाया जाता है और बुज़्रगान-ए-दीन ने भी अपनी क़ुरआन की समझ के अनुसार इस बारे में विभिन्न विचारों का प्रकट किया है।

क़ुरआन-ए-करीम, हदीसों आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के आदेशों की रोशनी में मेरा इस बारे में मत है कि मासिक धर्म के दिनों में महिलाएं को क़ुरआन करीम का जो हिस्सा ज़बानी याद हो, वह उसे मासिक धर्म के दिनों में जाप और प्रार्थनार के रूप में दिल में दोहरा सकती हैं। तथा आवश्यक के समय किसी साफ़ कपड़े में क़ुरआन-ए-करीम को पकड़ भी सकती है और किसी को हवाला इत्यादि बताने के लिए या बच्चों को क़ुरआन-ए-करीम पढ़ाने के लिए क़ुरआन-ए-करीम का कोई हिस्सा पढ़ भी सकती है लेकिन नियमित तिलावत नहीं कर सकतीं।

इसी तरह उन दिनों में महिलाएं को कम्पयूटर इत्यादि पर जिस में उसे बज़ाहिर क़ुरआन-ए-करीम पकड़ना नहीं पड़ता नियमित तिलावत की तो आज्ञा नहीं लेकिन किसी आवश्यक उदाहरणता हवाला तलाश करने के लिए या किसी को कोई हवाला दिखाने के लिए कम्पयूटर इत्यादि पर क़ुरआन-ए-करीम से लाभ प्राप्त कर सकती है। इस में कोई बाधा नहीं।

प्रश्न : **एक महिलाएं ने महिलाएंओं के निर्धारित दिनों में उनके मस्जिद में आने के बारे में विभिन्न हदीसों तथा वर्तमान समय में महिलाएंओं को इन दिनों में अपनी सफ़ाई इत्यादि के लिए उपलब्ध नए समानों के वर्णन पर आधारित एक नोट हुज़ूर अनवर की सेवा में प्रस्तुत कर के मसाजिद में होने वाली जमाअती मीटिंगज़ और इज्लासात इत्यादि में ऐसी महिलाएंओं की शमूलीयत और ऐसी ग़ैर मुस्लिम महिलाएंओं को मस्जिद का विज़िट इत्यादि करवाने के बारे में हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ से मार्गदर्शन चाहा**। जिस पर हुज़ूर अनवर ने अपनी तिथि 14 मई 2020 ई. में निमंलिखित उत्तर प्रदान फ़रमाया :

उत्तर : मासिक धर्म वाली महिलाएंओं के मस्जिद में से कोई वस्तु लाने या मस्जिद में छोड़कर आने तथा मस्जिद में जाकर बैठने के बारे में अलग-अलग आदेश बड़े विस्तार से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने हमें समझा दिए हैं। इसलिए जैसा कि आपने अपने पत्र में भी वर्णन फ़रमाया है कि आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपनी पत्नियों को इस हालत में चटाई इत्यादि बिछाने के लिए मस्जिद में जाने की आज्ञा फ़रमाया करते थे। लेकिन जहां तक इस हालत में मस्जिद में जा कर बैठने का सम्बन्ध है तो इस बारे में भी आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की मनाही बड़े विस्तार के साथ हदीसों में वर्णित है। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ईदों के अवसर पर कुँवारी लड़कियों, जवान और पर्दा-दार और मासिक धर्म वाली समस्त प्रकार की महिलाएंओं को ईद के लिए जाने की ताकीदन हिदायत फ़रमाई यहां तक कि ऐसी महिलाएं जिसके पास ओढ़नी न हो उसे भी फ़रमाया कि वह अपनी किसी बहन से कुछ देर के लिए ओढ़नी लेकर जाए। लेकिन इसके साथ मासिक धर्म के दिनों वाली महिलाएंओं के लिए यह भी हिदायत फ़रमाई कि वह नमाज़ की जगह से अलग रह कर दुआ में शामिल हों।

इसी तरह हज्जतुल विदा के अवसर पर जब हज से पहले अन्य मुस्लमान उमरा कर रहे थे, हज़रत आयशा रज़ियल्लाहु अन्हा अपने निर्धारित दिनों में थीं। इसलिए आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने उन्हें उमरा की आज्ञा नहीं दी क्योंकि तवाफ़ करने के लिए मस्जिद में ज़्यादा देर तक रहना पड़ता है। फिर जब वह उन दिनों से निकल गईं तो हज के बाद उन्हें अलग उमरा के लिए भिजवाया

अत: हदीसों में इस क़दर विस्तार के साथ वर्णन के बाद कोई कारण नहीं रह जाता कि हम अपनी इच्छाओं को पूरा करने के लिए नई नई राहें तलाश करें।

जहां तक इस बात का सम्बन्ध है कि पहले ज़माना में महिलाएंओं को अपनी सफ़ाई के लिए ऐसे माध्यम उपलब्ध नहीं थे जैसे अब हैं। ठीक है ऐसे नए माध्यम उपलब्ध नहीं थे लेकिन इस का यह कदापि अर्थात नहीं कि वह अपनी सफ़ाई का ध्यान ही नहीं रख सकती थीं और उनके हैज़ के ख़ून इधर उधर गिरते पड़ते थे। इन्सान ने हर ज़माना में अपनी आवश्यकताओं के लिए बेहतर से बेहतर इंतिज़ाम प्राप्त करने की कोशिश की है। अत: पहले ज़माना में भी महिलाऐं अपनी सफ़ाई सुथराई के लिए बेहतरीन इंतिज़ाम किया करती थीं।

फिर इस आधुनिक समय के माध्यम सफ़ाई सुथराई में भी बहरहाल कमी मौजूद हैं। ऐसी महिलाएं जिनको बहुत ज़्यादा ख़ून आता है कभी कबार उनका पेड Leak कर जाने की कारण से कपड़े ख़राब हो जाते हैं।

अत: इस्लाम की जो शिक्षात दाइमी और हर युग के लिए एक समान हैं, उन पर हर युग में इसी तरह अमल होगा जिस तरह आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के समय में होता था।

यदि किसी जगह मजबूरी है और नमाज़ के कमरे के अतिरिक्त और कोई जगह नहीं तो उसी कमरा के आख़िर पर दरवाज़ा के क़रीब एक ऐसी जगह निर्धारित की जा सकती है जहां नमाज़ न पढ़ी जाए और ऐसी महिलाऐं वहां बैठ जाया करें, या मस्जिद के आख़िर हिस्सा में ऐसी महिलाएंओं के लिए कुर्सियाँ रख कर उनके बैठने का इंतिज़ाम कर दिया जाए, ताकि नमाज़ पढ़ने की जगह के गंदा होने का हल्का सा भी संदेह बाक़ी न रहे।

जहां तक ग़ैर मुस्लिम महिलाएंओं के मसाजिद के विज़िट करने की बात है तो प्रथम तो विज़िट के दौरान उन्हें मसाजिद में बिठाया नहीं जाता बल्कि केवल मसाजिद का विज़िट करवाया जाता है। जिसका समय तक़रीबन इतना ही होता है जितना कि मस्जिद से चटाई लाने या बिछा कर आने का समय होता है। लेकिन यदि कहीं उन्हें मस्जिद में बिठाने की आवश्यक पड़े तो नीचे सफ़ों पर नमाज़ पढ़ने की जगह बिठाने की बजाय मस्जिद के आख़िर पर कुर्सीयों पर बिठाएँ। (शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

# ख़ुत्बः जुमअः

**अल्लाह की क़सम! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो कुछ कहा उस को पूरा कर दिया। सख़ती करने के अवसर पर सख़्ती में और नरमी के अवसर पर नरमी में बढ़ गए और वे लोगों के बाल बच्चों के बाप बन गए**

**"हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देख लो उनके रोब और दबदबा से एक तरफ़ संसार के बड़े बड़े बादशाह काँपते थे, क़ैसर और किस्रा की हुकूमतें तक भयभीत रहती थीं परन्तु दूसरी तरफ़ अँधेरी रात में एक बदवी महिला के बच्चों को भूखा देखकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा महान इन्सान तिलमिला उठा और वह अपनी पीठ पर आटे की बोरी लाद कर और घी का डिब्बा अपने हाथ में उठा कर उनके पास पहुंचा और उस वक़्त तक वापस नहीं लौटा जब तक कि उसने अपने हाथ से खाना पक्का कर उन बच्चों को नहीं खिला लिया और वे सकून से सौ नहीं गए।"**

**(हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु)**

## आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के महान ख़लीफ़ा राशिद फ़ारुके आज़म हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु की विशेषताओं का वर्णन

**चार मरहूमीन आदरणीय अब्दुल वहीद वड़ायच साहिब सदर जमाअत वॉल्ड शूट (Waldshut) जर्मनी, हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पड़ नवासी आदरणीया अम्तुल नूर साहिबा पत्नी डाक्टर अब्दुल मालिक शमीम साहिब वाशिंगटन अमरीका, आदरणीया बिसमिल्लाह बेग़म साहिबा पत्नी आदरणीय नासिर अहमद ख़ान साहब बहादुर शेर मरहूम (अफ़्सर हिफ़ाज़त-ए-ख़ास रब्वाह), आदरणीय कर्नल जावेद रुशदी साहिब आफ़ रावलपिंडी का वर्णन और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब**

**ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 25 जून 2021 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)**

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ ۔اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۔ غَيْرِالْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَاالضَّآلِّيْنَ

हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन चल रहा था। इस विषय में मैं आज ओर वर्णन करूँगा। ज़ैद बिन अस्लम से रिवायत है कि उनके पिता ने वर्णन किया कि मैं एक बार हज़रत उमर बिन ख़त्ताब रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ حَرَّةُ وَاقِم (स्थान का नाम) की तरफ़ गया। यह दो हुर्रों के मध्य की जगह है। हुर्रा काली पथरीली ज़मीन को कहते हैं। मदीना के पूर्व की जानिब حَرَّةُ وَاقِم (स्थान का नाम) है जिसको हुर्रा बनू क़ुरैज़ा भी कहते हैं। दूसरा حَرَّةُ الْوَبْرَة है जो मदीना के मग़रिब में तीन मील की दूरी पर है। बहरहाल कहते हैं मैं वहां गया। जब हम सिरार स्थान पर पहुंचे तो एक जगह एक आग रोशन थी। सिरार भी मदीना से तीन मील की दूरी पर है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया हे असलम मेरा विचार है कि यह कोई यात्री हैं जिनको रात और सर्दी ने रोक रखा है। हमारे साथ आओ। इसलिए हम तेज़-तेज़ चलते हुए उनके क़रीब पहुंचे तो देखा कि एक महिला के साथ उसके कुछ बच्चे हैं और एक हंडिया आग पर चढ़ी हुई है। उसके बच्चे भूख की वजह से चीख़ चीख़ कर रो रहे थे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया। अस्सलामो अलैकुम हे रोशनी वालो!। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने आग वाले कहना पसंद नहीं किया बल्कि रोशनी वाले कहा। उस महिला ने वाअलैकुम अस्सलाम कहा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : क्या मैं क़रीब आ सकता हूँ? उस महिला ने कहा : ख़ैर से आओ अन्यथा वापस लौट जाओ। अर्थात कोई ख़ैर की बात करनी है तो आओ अन्यथा वापस लौट जाओ। आप क़रीब हो गए। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तुम लोगों को क्या हुआ? तो उस महिला ने कहा रात और सर्दी ने हमें यहां रोक लिया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा इन बच्चों का क्या मुआमला है, ये क्यों चीख़ कर रो रहे हैं? उस महिला ने कहा भूख की वजह से। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि इस हंडिया में क्या वस्तु है? उस महिला ने कहा कि इसके अंदर केवल पानी है और उसके द्वारा मैं बच्चों को दिलासा दे रही हूँ यहां तक कि वे सो जाएं। अल्लाह हमारे और उमर रज़ियल्लाहु अन्हु, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के मध्य फ़ैसला करेगा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : हे महिला अल्लाह तुम पर रहम करे, उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को तुम्हारी हालत कैसे ज्ञात हो सकती है उसने कहा अर्थात उस महिला ने कहा कि वे हमारे बारे में निगरान हैं और हमसे ग़ाफ़िल हैं। असलम जो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ थे। वह कहते हैं कि फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु अर्थात हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मेरे पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया हमारे साथ चलो। फिर हम निहायत तेज़ी से चलते हुए دَارُالدَّقِيْق आए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने अह्द में دَارُالدَّقِيْق नाम से एक इमारत बनवाई थी जिसमें आटा, सत्तू, खजूर, किशमिश और अन्य यात्रा की आवश्यक वस्तुएं जिनकी एक यात्री को आवश्यक हो सकती है उपलब्ध होती थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मदीना और मक्का के मध्य रास्तों पर यात्रियों के लिए कुछ सराय ख़ाने भी बनवाए हुए थे। बहरहाल फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वहां से एक बोरा अनाज का निकाला और चिकनाई का डिब्बा आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने लिया। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाया : उसे मुझे उठवा दो। असलम कहते हैं मैंने कहा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु की जगह मैं उठा लेता हूँ। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने दो या तीन मर्तबा फ़रमाया कि मुझे ये उठवा दो। मैंने हर बार अर्ज़ किया कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु की जगह मैं उसे उठा लेता हूँ। आख़िर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : तेरा भला हो! क्या क़ियामत के दिन मेरा बोझ तुम उठाओगे? इस पर मैंने वह बोरा आप रज़ियल्लाहु अन्हु पर लाद दिया। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस बोरे को अपनी कमर पर लाद कर तेज़ क़दमों से चले और मैं भी तेज़ी से आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ चला यहां तक कि हम उस महिला के पास पहुंच गए। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने वह बोरी उसके पास उतारी और उस में से कुछ आटा निकाला और उस महिला से कहा कि उसे हंडिया में आहिस्ता-आहिस्ता डालो और मैं उसे तुम्हारे लिए हिलाता हूँ। दूसरी जगह लिखा है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुम आहिस्ता-आहिस्ता आटा डालो। मैं तुम्हारे लिए हरीरा तैयार करता हूँ। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु बर्तन के नीचे आग सुलगाने के लिए फूंक मारने लगे। असलम अर्थात रिवायत करने वाले कहते हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु (हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु) बड़ी और घन्नी दाढ़ी वाले थे। मैंने देखा कि धुआँ आप रज़ियल्लाहु अन्हु की दाढ़ी के अंदर से निकल रहा है। अर्थात धुआँ उठता था तो उनके चेहरे पर भी पड़ता था, दाढ़ी के अंदर से भी गुज़र जाता था। जब हंडिया पक गई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने हंडिया को नीचे उतारा। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कोई बर्तन लाओ। वह महिला बड़ी प्लेट लाई। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस में खाना डाला और कहने लगे तुम इन बच्चों को खिलाओ। मैं तुम्हारे लिए फैलाता हूँ ताकि ठंडा हो जाए, अर्थात उसको मज़ीद फैला के दूसरी जगह, दूसरे बर्तन में ठंडा करता हूँ। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु निरंतर ऐसा करते रहे यहां तक कि इन बच्चों ने पेट भर कर खाना खा लिया और जो बच गया वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस के पास छोड़ दिया। असलम कहते हैं: फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु खड़े हुए और मैं भी आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ खड़ा हो गया। इस पर वह महिला कहने लगी अल्लाह तआला आप रज़ियल्लाहु अन्हु को बेहतरीन जज़ा दे। तुम इस बात में अमीर-ऊल-मोमनीन से ज़्यादा हक़दार हो अर्थात जज़ा के। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया भलाई की बात कहो। जब तुम अमीर-ऊल-मोमनीन के पास जाओगी तो तुम इंशाअल्लाह मुझे वहां पाओगी। बहरहाल वह कहते हैं फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु वहां से एक तरफ़ हट गए। फिर उस महिला की तरफ़ मुँह कर के बैठ गए। मैंने आप रज़ियल्लाहु अन्हु की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि क्या इसके अतिरिक्त और भी कोई काम है। आप

रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुझसे कोई बात नहीं की यहां तक कि मैंने बच्चों को देखा कि वह एक दूसरे से खेल रहे थे और हंस रहे थे और समस्त बच्चे पुरस्कून हो कर सो गए तो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़ुदा का शुक्र अदा करते हुए खड़े हुए और मेरी तरफ़ मुतवज्जा हो कर फ़रमाया। हे असलम! भूख की वजह से ये बच्चे जाग रहे थे और रो रहे थे। मैंने पसंद किया कि मैं यहां से उस वक़्त तक न जाऊं जब तक कि मैं उनकी इस आराम की हालत को न देख लूं जो मैंने अभी देखी है। (तारीख़ तिबरी ले इब्ने जरीर भाग 2 पृष्ठ 567-568 सुन्नत 23 दारुल क़ुतुब इल्मिया बेरूत 1987 ई.) फर्हंग सीरत पृष्ठ 101,102,172 ज़ावर अकेडमी पब्लीकेशनज़ उर्दू बाज़ार सय्यदना उमर बिन ख़त्ताब शख़सीयत और कारनामे पृष्ठ 442 मक्तबा अल्फुर्क़ान ट्रस्ट ख़ान गढ़ ज़िला मुशफ्फरगढ़ पाकिस्तान, लिसानुल अरब ज़ेरे मादा हर

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी इस वाक़िया को वर्णन किया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि इन्सानी आवश्यकताएँ इन लोगों के लिए उपलब्ध करना जो उनको अर्थात उन आवश्यकताओं को प्राप्त नहीं कर सकते इस्लामी हुकूमत का फ़र्ज़ है। इस्लामी हुकूमत की ज़िम्मेदारी बता रहे हैं। इसके सम्बन्ध में हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक वाक़िया निहायत ही प्रभावी और उद्घाटक वास्तविकता रखता है। अर्थात हक़ीक़त को खोलने वाला है। एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ख़लीफ़ सानी बाहर पूछताछ कर रहे थे कि किसी मुस्लमान को कोई तकलीफ़ तो नहीं। मदीना, दारुल ख़िलाफ़ा से तीन मील के दूरी पर एक गांव मुरार नामी है। हमारे तहक़ीक़ करने वाले कहते हैं कि शायद मुरार नहीं बल्कि सिरार ही उसका नाम है। हो सकता है कातिब की ग़लती की वजह से मुरार लिखा गया हो। बहरहाल वहां आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने देखा कि एक तरफ़ से रोने की आवाज़ आ रही है। उधर गए तो देखा एक महिला कुछ पका रही है और दो तीन बच्चे रो रहे हैं। उस से पूछा कि क्या बात है। उसने कहा कि दो तीन वक़्त का अनाहार है। खाने को कुछ पास नहीं। बच्चे बहुत बेताब हुए तो ख़ाली हंडिया चढ़ा दी ताकि बेहल जाएं और सौ जाएं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह बात सुनकर फ़ौरन मदीना की तरफ़ वापस हुए। आटा, घी, गोश्त और खजूरें लीं और एक बोरी में डाल कर अपने ख़ादिम से कहा कि मेरी पीठ पर रख दें। उसने कहा हुज़ूर मैं मौजूद हूँ मैं उठा लेता हूँ। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उत्तर दिया : बेशक तुम इस वक़्त उठा कर ले चलोगे परन्तु क़ियामत के दिन मेरा बोझ कौन उठाएगा अर्थात उनकी रोज़ी का विचार रखना मेरा फ़र्ज़ था और इस फ़र्ज़ में मुझ से कोताही हुई है। इसलिए इसका कफ़्फ़ारा यही है कि मैं स्वयं उठा कर यह सब वस्तुएं ले जाऊं और उनके घर पहुंचाऊं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु लखते हैं इस वाक़िया से कोई यह अर्थात नहीं निकाल ले कि ज़रूरतमंदों को जो वज़ायफ़ दिए जाते हैं यह सुस्ती पैदा करने के लिए हैं बल्कि हर ज़रूरतमंद को वज़ीफ़ा देना है। इसलिए आप लिखते हैं कि इस्लाम जहां ग़रीबों की ख़बरगीरी का हुक्म देता है वहां जैसा कि पहले इस विषय में वर्णन हुआ है कि सुस्ती और काहिली को भी मिटाता है। वज़ायफ़ इसलिए नहीं दिए जाते कि सुस्ती और काहिली पैदा हो। इन वज़ायफ़ का यह उद्देश्य नहीं था कि लोग काम छोड़कर बैठें बल्कि केवल मजबूरों को ये वज़ायफ़ दिए जाते थे अन्यथा मांगने से लोगों को रोका जाता था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु मांगने वालों को मांगने से रोकने के लिए भी बहुत सख़्त कार्य किया करते थे। यही नहीं कि केवल भूखा देख लिया तो खाना खिला दिया, कोई मांगने आया तो उस को दे दिया बल्कि मांगने वाला यदि सेहत मंद है तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु बड़ा सख़्त क़दम उठाया करते थे। एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक मांगने वाले को देखा उस की झोली आटे से भरी हुई थी। आटा उस की झोली में पड़ा हुआ था और वह मांग रहा था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस से आटा लेकर ऊंटों के आगे डाल दिया और उस की झोली ख़ाली कर दी और फ़रमाया कि अब मांग। इसी तरह यह साबित है कि मांगने वालों को काम करने पर मजबूर किया जाता था।

(उद्धरित अहमदियत अर्थात हक़ीक़ी इस्लाम, अनवारुल ऊलूम भाग 8 पृष्ठ 296-297)

अर्थात तुम अच्छे भले इन्सान हो। तुम्हारा मांगने से क्या काम है। मेहनत करो, कमाओ और खाओ और यह सबक़ दिया कि दुबारा माँगोगे तो दुबारा तुम्हारे से यही सुलूक होगा कि तुम्हारे से छीन के जानवरों के आगे डाल दिया जाएगा। अधिकतर मांगने वाले ये एक मिसाल देकर इस पर-ज़ोर देते हैं कि देखो हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु किस तरह ख्याल रखते थे लेकिन मांगने से जिस सख़्ती से इस्लाम ने रोका है इस को नहीं देखते और इस पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम का अमल भी है और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी फिर उस को जारी किया, उस को नहीं देखते।

फिर इस वाक़िया को एक और जगह वर्णन फ़रमाते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने यूं वर्णन फ़रमाया कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देख लो। उन के रोब और दबदबे से एक तरफ़ संसार के बड़े-बड़े बादशाह काँपते थे। क़ैसर और किस्रा की हुकूमतें तक भयभीत रहती थीं परन्तु दूसरी तरफ़ अँधेरी रात में एक बदवी महिला के बच्चों को भूखा देखकर उमर रज़ियल्लाहु अन्हु जैसा महान इन्सान तिलमिला उठा और अपनी पीठ पर आटे की बोरी लाद कर और घी का डिब्बा अपने हाथ में उठा कर उनके पास पहुंचा और उस वक़्त तक वापस नहीं लौटा जब तक कि उसने अपने हाथ से खाना पक्का कर इन बच्चों को नहीं खिला लिया और वे सकून से सौ नहीं गए।"

(सैर-ए-रुहानी 6) अनवारुल ऊलूम भाग 22 पृष्ठ 596)

फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के यही आज़ाद करदा ग़ुलाम असलम, जिनका पहले भी वर्णन हुआ है, यह कहते हैं कि मदीना में ताजिरों का एक क़ाफ़िला आया और उन लोगों ने ईद-गाह में क़ियाम किया। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने हज़रत अब्दुर्रहमान बिन ओफ़ रज़ियल्लाहु अन्हु से फ़रमाया क्या तुम पसंद करते हो कि हम रात के वक़्त उनका पहरा दें? उन्होंने अर्ज़ किया जी हाँ। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु दोनों सारी रात उनकी हिफ़ाज़त करते रहे और इबादत करते रहे। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु आस तरफ़ गए और उस की माँ से कहा अल्लाह तआला का ख़ौफ़ करो और अपने बच्चे का अच्छी तरह ख्याल रखो। यह कह कर आप रज़ियल्लाहु अन्हु वापस तशरीफ़ ले आए अर्थात वापस उस जगह तशरीफ़ ले आए जहां आप रज़ियल्लाहु अन्हु सामान की हिफ़ाज़त के लिए बैठे हुए थे कि फिर आपने उनके रोने की आवाज़ सुनी। आप रज़ियल्लाहु अन्हु दोबारा उस की माँ की तरफ़ गए और उस को फिर पहली बात की तरह कहा और अपनी जगह वापस तशरीफ़ ले आए। जब रात का अंतिम वक़्त हुआ और बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी तो आप उसकी माँ के पास तशरीफ़ लाए और फ़रमाया तेरा भला हो तू बहुत लापरवाह माँ है। मुझे क्या है कि मैं देखता हूँ कि सारी रात रोने की वजह से तुम्हारा बच्चा बेचैन रहा। उस महिला ने कहा कि हे अल्लाह बंदे! मैं इस को दूध के अतिरिक्त दूसरी ख़ुराक की तरफ़ मायल कर रही हूँ लेकिन वह बच्चा इंकार कर देता है। कहता है कि मुझे दूध ही दो। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा वह क्यों ? उस महिला ने कहा क्योंकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उन्ही बच्चों का वज़ीफ़ा निर्धारित करते हैं जिनका दूध छुड़ा दिया गया हो। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने पूछा तुम्हारे इस बच्चे की आयु कितनी है? इस महिला ने कहा इतने (वर्ष) और इतने महीन। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया तेरा भला हो। दूध छुड़ाने में इतनी जल्दी न कर। फिर जब आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने लोगों को फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु के रोने की वजह से किरात लोगों पर वाज़िह नहीं हो रही थी। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने आपसे कहा, उमर का बुरा हो उसने कितने ही मुस्लमानों के बच्चों का ख़ून कर दिया है। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मुनादी करने वाले को हुक्म दिया तो उसने ऐलान किया कि अपने बच्चों को दूध छुड़वाने में जल्दी न करो। इस्लाम में जो भी बचा है अर्थात अब हर पैदा होने वाले बच्चे का हम वज़ीफ़ा निर्धारित करते हैं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने सारे देशों में यह हुक्म भिजवा दिया। (अल् बदाय वन्नाहाया ले इब्ने कसीर भाग 10 पृष्ठ 185 से 186 प्रकाशन दारे हिज्र 1998 ई.)

इस वाक़िया को हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने भी अपने अंदाज़ में वर्णन फ़रमाया है कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने शुरू-शुरू में दूध पीते बच्चों के लिए कोई वज़ीफ़ा निर्धारित नहीं किया था लेकिन बाद में दूध पीते बच्चों का हक़ स्वीकार कर लिया और हुक्म दिया कि उनका हिस्सा इनकी माओं को दिया जाए। पहले हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु यह समझते थे कि जब तक बच्चा दूध पीता है वह क़ौम के वजूद में हिस्सा नहीं लेता। उसकी ज़िम्मेदारी उस की माँ पर है पब्लिक पर नहीं" है कि बैतुल माल से उस का ख़र्च दिया जाए "लेकिन एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु सैर के लिए बाहर तशरीफ़ ले गए। शहर से बाहर एक क़ाफ़िला बदवियों का उतरा हुआ था। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक ख़ेमें से बच्चे के रोने की आवाज़ सुनी। बच्चा चीख़ रहा था और माँ थपक थपक कर सुलाने की कोशिश कर रही थी। जब कुछ समय तक थपकी देने के अतिरिक्त बचा चुप नहीं हुआ तो माँ ने बच्चे को थप्पड़ मार कर कहा। रोओ उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की जान को। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु हैरान हुए कि इस बात से मेरा क्या सम्बन्ध है? हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस महिला से ख़ेमा में दाख़िल होने की आज्ञा ली और अंदर जा कर उस महिला से पूछा बी-बी क्या बात है? चूँकि वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को पहचानती नहीं थी इस लिए कहने लगी बात क्या है? उमर

रज़ियल्लाहु अन्हु ने सबके गुज़ारे निर्धारित किए हैं लेकिन उसको यह ज्ञात नहीं कि दूध पीते बच्चों के लिए भी ग़िज़ा की आवश्यक है। अब मेरे पास दूध पूरा नहीं और मैंने उस का दूध छुड़ा दिया है ताकि उस का वज़ीफ़ा निर्धारित हो जाए। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उसी वक़्त वापस आए और आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने खज़ाने से आटे की बोरी निकलवाई और स्वयं उठा कर चलने लगे। वह आदमी जो ख़ज़ाना पर निर्धारित थे वे आगे बढ़े कि हम उठा कर ले चलते हैं। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनसे कहा तुम छोड़ दो मैं स्वयं उठा कर ले जाऊँगा। क़ियामत के दिन जब मुझे कौड़े लगेंगे तो क्या मेरी जगह तुम उत्तर दोगे? पता नहीं कि इस तरह मेरे द्वारा कितने बच्चे मर गए हैं। इसके बाद हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह हुक्म दिया कि दूध पीते बच्चों का भी वज़ीफ़ा निर्धारित किया जाए।''

(ख़ुतबात-ए-महमूद भाग 27 पृष्ठ 353)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं कि "हदीस में عَمَّار بن خُزَيْمَه से रिवायत है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने मेरे बाप को फ़रमाया कि तुझे किस वस्तु ने अपनी ज़मीन में दरख़्त लगाने से मना किया है?" (वह आगे मज़ीद दरख़्त नहीं लगा रहा था, अपने बाग़ को बढ़ा नहीं रहा था या जो ख़राब पौधे थे उनकी जगह नए पौधे नहीं लगा रहा था तो मेरे बाप ने उत्तर दिया कि मैं बूढ़ा हो चुका हूँ। कल मर जाऊंगा गा। (मुझे क्या फ़ायदा इस का?) अत: उस को हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कि तुझ पर अनिवार्य है कि दरख़्त लगाए। (ये कोई दलील नहीं है। अनिवार्य तुमने ये दरख़्त लगाने हैं) कहते हैं "फिर मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को देखा कि स्वयं मेरे बाप के साथ मिलकर हमारी ज़मीन में दरख़्त लगाते थे।"

(मलफ़ूज़ात भाग 2 पृष्ठ 92)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने यह वाक़िया सुस्ती और आलस्य से बचने के विषय में भी वर्णन फ़रमाया है और यह भी कि पिछली नसल के लगाए हुए पौधों के फल तुम खा रहे हो तो अगली नसल के लिए भी पौधे छोड़ के जाओ।

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रात को दौरा किया करते थे। एक बार रात को शहर में फिर रहे थे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने एक महिला को सुना कि वह इश्क़िया शेअर पढ़ रही है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने दिन को तहक़ीक़ात की तो ज्ञात हुआ कि उसका पति लम्बे समय से बाहर रहता है। "फ़ौज में बाहर गया हुआ है:" आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फिर यह हुक्म दे दिया इसके बाद आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने यह हुक्म दिया'' कि कोई सिपाही चार माह से ज़्यादा बाहर न रहे। यदि कोई सिपाही ज़्यादा लम्बे समय तक बाहर रहना चाहता हो तो अपनी बीवी को भी अपने साथ रखे अन्यथा चार माह के बाद उसे फ़ौज का अफ़्सर मजबूरन वापस घर भेज दे।"

(ख़ुतबात-ए-महमूद रज़ियल्लाहु अन्हु भाग 4 पृष्ठ 63 वर्ष 1914 ई.)

इसकी तफ़सील में एक जगह यह भी वर्णन हुआ है कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया उस महिला से, जो शेअर पढ़ रही थी उस के शेअर सुनके पूछा कि तुमने कोई बुराई का इरादा तो नहीं किया? उस महिला ने कहा कि अल्लाह की पनाह। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस महिला को फ़रमाया कि अपने आप पर क़ाबू रखों। उस की तरफ़ मैं अभी पत्र रवाना कर रहा हूँ अर्थात तुम्हारे पति की तरफ़ मैं अभी पत्र रवाना कर रहा हूँ। इसलिए आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उस की तरफ़ क़ासिद को भिजवायाता कि उसको वापस बुलाया जाए। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने मज़ीद तहक़ीक़ की और फिर जैसा कि वर्णन हो चुका है कि चार महीना का ज़्यादा से ज़्यादा समय रखा कि इस अरसा से ज़्यादा पति बाहर न रहे या फिर बीवी बच्चे साथ हों।

(उद्धरित तारीख़ खुलफ़ा लिल् सयूती, पृष्ठ 111 फसल फी नबज़ मिन अख़बारह व कज़ायाहो प्रकाशन दारुल कुतुब अलअरबी बैरूत 1999 ई)

असलम, हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के वही आज़ाद करदा ग़ुलाम वर्णन करते हैं कि एक रात मैं हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ मदीना के बाहरी हिस्सा में गया तो हमें एक ख़ेमा नज़र आया। हमने इस ख़ेमा की तरफ़ जाने का इरादा किया तो क्या देखते हैं कि इस ख़ेमे में एक महिला प्रसव पीड़ा में ग्रस्त है और रो रही है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उससे इस का हाल दरयाफ़त फ़रमाया तो उसने अर्ज़ किया। मैं एक यात्री परदेसी महिला हूँ और मेरे पास कुछ नहीं है। इस पर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु रो पड़े और तेज़ी से अपने घर वापस लौटे और अपनी पत्नी हज़रत उम्मे कुलसूम पुत्री अली रज़ियल्लाहु अन्हो से फ़रमाया क्या तुम नेकी प्राप्त करना चाहती हो जो अल्लाह तुम्हारे पास लाया है। आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने सारी बात उनको बताई। इस पर उन्होंने कहा जी अवश्य। फिर हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपनी पीठ पर आटा और चर्बी उठाई और हज़रत उम्मे कुलसूम ने प्रसव पीड़ा का आवश्यक का सामान उठाया और वे दोनों आए। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा उस महिला के पास गईं और हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु उस महिला के पति के साथ बैठ गए। वहां पति भी वहां मौजूद था। वह आप रज़ियल्लाहु अन्हु को नहीं पहचानता था। आप रज़ियल्लाहु अन्हु उस के साथ गुफ़्तगु करने लगे। उस महिला ने लड़के को जन्म दिया। हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा ने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को आ कर बताया और अर्ज़ की कि हे अमीर-ऊल-मोमनीन अपने साथी को लड़के की ख़ुशख़बरी दे दें। अर्थात वह जो इस महिला का पति है उसे ख़ुशख़बरी दे दें कि लड़का पैदा हुआ है। जब इस व्यक्ति ने हज़रत उम्मे कुल्सूम रज़ियल्लाहु अन्हा की यह बात सुनी तो उस को एहसास हुआ। उस को तो नहीं पता था कि किस के साथ बैठा है, कि वह कितने अज़ीम व्यक्ति के साथ बैठा हुआ था और वह हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से क्षमा मांगने लगा। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया कोई बात नहीं। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने उनको ख़र्च और आवश्यक सामान पहुंचाया और वापस तशरीफ़ ले आए।

(अल् बदाय वन्नाहाया ले इब्ने कसीर भाग 10 पृष्ठ 186 प्रकाशन दार हिज्र 1998 ई.)

सअईद बिन मुसय्यिब और अबूओ सलमा बिन अब्दुर्रहमान ने वर्णन किया कि अल्लाह की क़सम! हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने जो कुछ कहा उस को पूरा कर दिया। सख़्ती करने के अवसर पर सख़्ती में और नरमी के अवसर पर नरमी में बढ़ गए और वह लोगों के बाल बच्चों के बाप बन गए यहां तक कि उन महिलों के पास जाते जिनके पति बाहर गए हुए थे। उनके दरवाज़ों पर पहुंच कर उनको सलाम करते फिर कहते क्या तुम्हारी कोई आवश्यक है? या तुम कोई आवयश्कता की वस्तु मंगवाना चाहो तो मैं वह वस्तु तुम्हें बाज़ार से खरीद कर ला दूँगा। मुझे यह नापसंद है कि ख़रीद-ओ-फ़रोख़्त में तुम्हें धोखा दिया जाए तो वे महिलाएं आप रज़ियल्लाहु अन्हु के साथ अपनी बच्चियों को या बच्चों को भी भेज देती थीं। आप रज़ियल्लाहु अन्हु बाज़ार में इस तरह जाते कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु के पीछे लोगों की बच्चियाँ और बच्चे इतने होते कि उनका शुमार करना मुश्किल होता। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु हर एक के लिए उनकी आवश्यक चीज़ें ख़रीदते और जिन महिलों का कोई बच्चा नहीं होता तो उस के लिए स्वयं ख़रीदारी करते। जब किसी लश्कर में से कोई दूत आता तो इस से उन महिलों के पतियों के पत्रों को लेकर स्वयं उनको पहुंचाते और उनसे फ़रमाते कि तुम्हारे पति अल्लाह की राह में गए हुए हैं और तुम रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के शहर में हो। यदि तुम्हारे पास कोई है जो यह ख़त पढ़ सके तो ठीक है अन्यथा दरवाज़े के क़रीब खड़ी हो जाओ ताकि मैं तुम्हें पढ़ कर सुना दूं। फिर फ़रमाते कि हमारा दूत यहां से अमुक अमुक दिन जाएगा तुम ख़त लिख देना ताकि हम तुम्हारे पत्रों को भेज दें। फिर सब महिलों के हाँ ख़ुतूत के लिए काग़ज़ और दवातें लेकर जाते फिर उनमें से जो ख़त लिख देती उस का ख़त लेते और जो नहीं लिख सकती तो फ़रमाते कि यह काग़ज़ और दवात है तुम दरवाज़े के क़रीब आ जाओ और मुझे लिखवाओ। इस तरह आप रज़ियल्लाहु अन्हु एक एक दरवाज़े पर जाते और उनके पतियों को उनकी तरफ़ से ख़ुतूत लिखते। फिर उन ख़ुतूत को भेज देते।

(उद्धरित इज़ालतुल ख़िफा अन ख़िलाफतुल ख़ुलफा लेखक शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी(अनुवाद) भाग 3 पृष्ठ 228-229 प्रकाशन कदीमी कुतब खाना कराची)

हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हो वर्णन फ़रमाते हैं कि मैंने देखा कि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ऊंट का पालान कंधे पर रखे हुए अब्ता की तरफ़ तेज़ी से जा रहे थे। यह अब्ता भी मक्का और मिना के क़रीब एक जगह का नाम है। तो हज़रत अली रज़ियल्लाहु अन्हु कहते हैं। मैंने कहा हे अमीर-ऊल-मोमनीन कहाँ जा रहे हैं? तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया सदक़े का एक ऊंट भाग गया है। मैं इस को तलाश करने जा रहा हूँ। मैंने हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु से अर्ज़ किया कि ऐसी बातें आप रज़ियल्लाहु अन्हु कर रहे हैं कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने अपने बाद आने वाले खलि़फ़ा के लिए ऐसी राहें निर्धारित कर दी हैं कि जिन पर चलना आसान नहीं है। हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया: हे अबुल्हसन मुझे मलामत न करो। उस की क़सम है जिसने मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को नबुव्वत के साथ मबऊस किया यदि बकरी का बच्चा भी दरिया-ए-फ़ुरात के किनारे ज़ाए हो गया तो क़ियामत के दिन उमर की इस पर पूछताछ होगी।

(उद्धरित इज़ालतुल ख़िफा अन ख़िलाफतुल ख़ुलफा लेखक शाह वलीउल्लाह मुहद्दिस देहलवी(अनुवाद) भाग 3 पृष्ठ 228-229 प्रकाशन कदीमी कुतब खाना कराची)

(मुअजमुल बुलदान भाग 1 पृष्ठ 95)

हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु वर्णन फ़रमाते हैं कि "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के ज़माना में एक मुस्लमान ऐसी हालत में चले आ रहे थे कि उन्होंने गर्दन नीची डाली हुई थी'' अर्थात एक मुस्लमान व्यक्ति था जो नीचे गर्दन झुकाए हुए चला आ रहा था। कोई सदमा पहुंचा होगा, कोई तकलीफ़ पहुंची होगी इस वजह से परेशान होगा। नीचे गर्दन डाली हुई थी। "हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस की ठोढ़ी पर मुक्का मारा और कहा इस्लाम की फ़ुतूहात का ज़माना है और तुम अपनी गर्दन झुकाए फिर रहे हो!!" अर्थात यह ज़माना है और इस्लाम की फ़ुतूहात हो रही हैं। यदि तुम्हें कोई थोड़ी सी तकलीफ़ पहुंची भी है तो इस की वजह से तुमने अपना सिर नीचे कर लिया है। नीचे गर्दन झुका कर चल रहे हो। यह कोई तरीक़ा नहीं है। "ख़ुदा तआला ने इस वक़्त इस्लाम को हुकूमत दी है। संसार जो चाहे कहे परन्तु तुम तो यक़ीन रखते हो कि इस्लाम को फ़तह होगी। यदि तुम यक़ीन रखते हो कि इस्लाम को फ़तह होगी तो फिर रोना किया।"

(क़ादियान से हमारी हिज्रत एक आसमानी तक़दीर थी, अनवारुल ऊलूम भाग 21 पृष्ठ 379)

फिर छोटी-छोटी बातों पर रोने की आवश्यक नहीं है और या एक जगह से मुस्लमानों को कहीं भी कोई तकलीफ़ पहुंची है तो कोई रोने की, परेशान होने की बात नहीं है। यह बात हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु ने क़ादियान से हिज्रत के बाद इस विषय में वर्णन फ़रमाई थी और फ़रमाया कि एक मोमिन को यह नहीं देखना चाहिए कि उसने क्या खोया है। यदि कोई वस्तु जाए भी हो गई है, नुक़्सान भी थोड़ा हो गया तो यह नहीं देखना चाहिए कि क्या खोया है बल्कि यह देखना चाहिए कि किस के लिए खोया है। यदि ख़ुदा तआला के लिए और इस्लाम की तरक़्क़ी के लिए कोई वस्तु जाए हुई है, हाथ से निकल गई तो फिर अल्लाह तआला बेहतरीन अज्र देगा। अस्थाई नुक़्सानों पर परेशान होने की आवश्यक नहीं होती।

इसी तरह हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु का एक मशहूर वाक़िया वर्णन फ़रमाते हैं कि जिसके परिणाम में आप लिखते हैं कि जबकि हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु को तकलीफ़ भी उठानी पड़ी परन्तु आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तकलीफ़ की कोई पर्वा नहीं की और वह मुसावात क़ायम की जो इस्लाम संसार में क़ायम करना चाहता है। वह वाक़िया यह है कि جَبَلَہ ابنِ اَیْہَم एक बहुत बड़े ईसाई क़बीले का सरदार था। जब शाम की तरफ़ मुस्लमानों ने हमले शुरू किए तो यह अपने क़बीला समेत मुस्लमान हो गया और हज के लिए चल पड़े। हज में एक जगह बहुत बड़ा हुजूम था। संयोगवश किसी मुस्लमान का पांव उस के पांव पर पड़ गया। कुछ रिवायतों में है कि इस का पांव उस के जुब्बा के दामन पर पड़ गया। चूँकि वह अपने आपको एक बादशाह समझता था और विचार करता था कि मेरी क़ौम के साठ हज़ार आदमी मेरे आज्ञाकारी अधीन हैं बल्कि कुछ तारीख़ों में से पता चलता है कि साठ हज़ार केवल उस के सिपाहीयों की संख्या थी। बहरहाल जब एक नंग धड़ंग मुस्लमान का पैर उस के पैर पर आ पड़ा तो उसने ग़ुस्सा में आकर ज़ोर से उसे थप्पड़ मार दिया और कहा तू मेरी अपमान करता है। तू जानता नहीं कि मैं कौन हूँ? तुझे अदब से पीछे हटना चाहिए था। रु ने गुस्ताख़ाना तौर पर मेरे पांव पर अपना पांव रख दिया। वह मुस्लमान तो थप्पड़ खा कर ख़ामोश हो गया परन्तु एक और मुस्लमान बोल पड़ा कि तुझे पता है कि जिस मज़हब में तू दाख़िल हुआ है वह इस्लाम है और इस्लाम में छोटे बड़े में कोई अंतर नहीं। विशेषता इस घर अर्थात ख़ाना काअबा में जिसका तुम तवाफ़ कर रहे हो अमीर और ग़रीब में कोई फ़र्क़ नहीं समझा जाता। उसने कहा में इस की पर्वा नहीं करता। इस मुस्लमान ने कहा कि उमर रज़ियल्लाहु अन्हु के पास तुम्हारी शिकायत हो गई तो वह इस मुस्लमान का बदला तुमसे लेंगे। जबला इब्ने अयहम ने जब सुना तो आग बगूला हो गया और कहने लगा कि क्या कोई व्यक्ति है जो जबला इब्ने अयहम के मुँह पर थप्पड़ मारे। उसने कहा कि किसी और का तो मुझे पता नहीं परन्तु उमर रज़ियल्लाहु अन्हु तो ऐसे ही हैं। यह सुन कर उसने ने जल्दी से तवाफ़ किया और सीधा हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु की मज्लिस में पहुंचा और पूछा कि यदि कोई बड़ा आदमी किसी छोटे आदमी को थप्पड़ मार दे तो आप रज़ियल्लाहु अन्हु क्या करते हैं? उन्होंने फ़रमाया यही करते हैं कि उस के मुँह पर उस छोटे व्यक्ति से थप्पड़ मरवाते हैं। वह कहने लगा कि आप रज़ियल्लाहु अन्हु मेरा अर्थात समझे नहीं। मेरा अर्थात यह है कि यदि कोई बहुत बड़ा आदमी थप्पड़ मार दे तो फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु क्या करते हैं? आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने फ़रमाया : इस्लाम में छोटे बड़े में कोई अंतर नहीं है। फिर आप रज़ियल्लाहु अन्हु ने कहा जब्ला तुम ही तो यह ग़लती नहीं कर बैठे? इस पर उसने झूट बोल दिया और कहा कि मैंने तो किसी को थप्पड़ नहीं मारा। मैंने तो केवल एक बात पूछी है परन्तु वह उसी वक़्त मज्लिस से उठा और अपने साथियों को लेकर अपने मलिक की तरफ़ भाग गया और अपनी क़ौम समेत मुर्तद हो गया और मुस्लमानों के ख़िलाफ़ रूमी जंग में शामिल हुआ लेकिन हज़रत उमर रज़ियल्लाहु अन्हु ने उसकी पर्वा नहीं की।(उद्धरित सैर-ए-रुहानी 2) अनवारुल ऊलूम भाग 16 पृष्ठ 42-43) यह वह मुसावात थी जो इस्लामी हुकूमत ने क़ायम की और आज की इस्लामी हुकूमतों के लिए भी यह सबक़ है।

यह वर्णन अब इंशाअल्लाह आगे चलेगा। इस वक़्त में कुछ मरहूमीन का वर्णन करूँगा। इस में से पहला वर्णन है अब्दुल वहीद वड़ायच साहिब का जो वॉल्ड शूट (Waldshut) जर्मनी के सदर जमाअत थे। साबिक़ सदर ख़ुद्दामुल अहमदिया और साबिक़ नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत स्विटज़रलैंड भी थे। यह 12 मई को माउंट ऐवरैस्ट को सफ़ली के साथ चढ़ने और उस पर अहमदियत का झंडा लहराने के बाद नीचे उतरते हुए तबीयत ख़राब होने पर 41वर्ष की आयु में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके पीछे रहने वालों में विधवा पत्नी के अतिरिक्त तीन बेटे और दो बेटियां हैं। माता पिता हैं। एक भाई और दो बहनें हैं।

अमीर साहिब स्विटज़रलैंड तारिक़ तार नस्तर साहिब लिखते हैं कि अब्दुल वहीद वड़ायच साहिब शुरू से लेकर अपनी वफ़ात तक सदैव जमाअत के एक सक्रिय मैंबर रहे। बतौर मैंबर जमाअत और ओहदेदार मरहूम एक मिसाली अहमदी थे। वह एक वफ़ादार अहमदी थे। अब्दुल वहीद वड़ायच साहिब जमाअती ख़िदमात सदैव निहायत आजिज़ी के साथ बजा लाते थे। उनके औसाफ़ में तकब्बुर की कोई जगह नहीं थी। वह इन्सानी ख़िदमत का न केवल दरस देते थे बल्कि स्वयं अपने आचरण के साथ कर के दिखाते थे। IAAAE के विभिन्न प्राजेक्टस के लिए अफ़्रीक़ा भी गए और वहां इन्सानियत की ख़िदमत की जिसे देखकर कई नौजवान भी उनकी उदाहरणपर चलते हुए अफ़्रीक़ा गए। सदर मज्लिस ख़ुद्दामुल अहमदिया जब निर्धारित हुए तो नए-नए अवसर तलाश करते थे जिनसे नौजवानों की शिक्षा और तर्बीयत का इंतिज़ाम हो सके और उन्हें यूरोप की भौतिकवादी सोच और दिलचस्पी से बचाया जा सके। माली क़ुर्बानी भी उनकी मिसाली थी। और यही अमीर साहिब लिखते हैं कि उनके बेटे प्रिय तल्हा वड़ायच जो इस वक़्त जामिआ अहमदिया जर्मनी में शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं उस की तर्बीयत भी बड़ी अच्छी की और इसी का परिणाम है कि उनका बच्चा जामिआ में पढ़ रहा है। संक्षेप में यदि कहा जाए तो अब्दुल वहीद वड़ायच साहिब मरहूम हुक़ूक़ अल्लाह और हुक़ूकुल ईबाद अदा करने वाले एक मिसाली अहमदी थे।

ग़ैर अज़ जमाअत लोगों ने भी उनकी वफ़ात पर अफ़सोस का इज़हार किया। मिस्टर स्टीफ़न लार्च (Mr. Stefan Lorch) लिखते हैं कि वहीद वड़ायच साहिब ने उनके साथ कई साल स्विसकाम (Swisscom) कंपनी में काम किया जो स्विटज़रलैंड की सबसे बड़ी टैली कम्यूनीकेशन कंपनी है और तक़रीबन एक वर्ष उनके साथ उनकी टीम में काम करता रहा हूँ। मैं उनकी केवल उनकी फ़ील्ड में क़ाबिलीयत की वजह से क़दर नहीं करता था बल्कि विशेषता उनके व्यवहार के कारण से। वहीद वड़ायच साहिब सदैव ख़ुशअख़लाक़ी से पेश आते। वह दूसरों की सहायता करने वाले दयानतदार और काबिल-ए-एतिमाद शख़्सियत के मालिक थे। मुझे उनसे काम से हट कर भी बात चीत करना बहुत पसंद था।

मुरब्बी साहिब लिखते हैं कि वह निहायत उच्च विशेषताओं के मालिक थे। ख़िलाफ़त से इशक़ था। बाक़ायदगी से नमाज़-ए-जुमा मस्जिद में अदा करते और बाक़ी नमाज़ें भी मस्जिद में अदा करने की कोशिश करते। तहज्जुद गुज़ार थे। उनके नैशनल सैक्रेटरी माल रिज़वान साहिब कहते हैं कि माईक्रोसाफ़्ट कंपनी की स्विटज़रलैंड ब्रांच में सॉफ्टवेअर इंजीनियर के तौर पर जॉब कर रहे थे तो एक बार मुझे कहने लगे कि माईक्रोसाफ़्ट स्विटज़रलैंड की ब्रांच ख़त्म कर के सिलीकोन वैली (Silicon valley)ले जा रहे हैं और उन्होंने मुझे ऑफ़र दी है कि हमारे साथ चलें। वहां सारी सहूलतें प्रदान होंगी और तनख़्वाह भी बढ़ जाएगी और स्विटज़रलैंड से आपका सामान, सब कुछ हम वहां स्थानांतरित करेंगे तो आपने बताया कि मैंने उन्हें इंकार कर दिया है क्योंकि मेरे ज़िम्मा यहां जमाअती ख़िदमात हैं। मैं उनको छोड़ना नहीं चाहता कि यहां से इंकार कर दूं और वहां चला जाऊं। फिर इसके कुछ दिनों के बाद आपने बताया कि अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस ब्रांच को स्विटज़रलैंड की बड़ी कंपनी स्विस काम ने ख़रीद लिया है और कहने लगे कि वह तो मुझे वहां ले जा रहे थे लेकिन अल्लाह तआला ने यहां इंतिज़ाम कर दिया और न केवल यहां बल्कि अल्लाह का ऐसा फ़ज़ल हुआ हैकि मेरी जो यहां तनख़्वाह है वो बॉस (boss) से भी ज़्यादा है।

नैशनल सैक्रेटरी उमूर-ए-ख़ारिजा ज़ाहिद साहिब हैं। वह कहते हैं उनको छब्बीस वर्षों से जानता था। ख़ुद्दामुल अहमदिया ही में उनके साथ ख़िदमत का अवसर

मिलता रहा। इंतिहाई शरीफ़ उल-नफ़स, नमाज़ रोज़े के पाबंद, दुआ करने वाले, इंतिहाई मेहनती, ख़िलाफ़त के फ़िदाई और फ़रमांबर्दार, शफ़ीक़ दोस्त और मिलनसार इन्सान थे। जवानी की आयु से ही बाक़ी नौजवानों से अलग तबीयत के मालिक थे। मरहूम को कभी भी ग़ुस्सा में नहीं देखा। न ही कभी इसका तास्सुर उनके चेहरे पर देखा या लहजे में महसूस किया। कभी ऊँची आवाज़ या सख़्ती से बात करते नहीं देखा। ग़लतियाँ भी सरज़द होती थीं सदैव हमें अकेले में नरमी से समझा देते थे। बड़ों और छोटों से सदैव ख़ुशखुलक़ी और प्रसन्नता से पेश आते थे। हल्की सी मुस्कुराहट चेहरे पर होती थी। जान, माल, वक़्त और इज़्ज़त को क़ुर्बान करने के लिए तैयार रहने की ज़िंदा मिसाल थे। स्विटज़रलैंड के बीसियों ऐसे नौजवान हैं जिनकी मरहूम ने शिक्षा और भविष्य के बारे में न केवल राहनुमाई की बल्कि दर्जनों को रोज़गार प्राप्ति में भी सहायता की। खुद्दामुल अहमदिया के अधीन उन्होंने अहमदिया हाईकिंग कलब भी क़ायम किया और बीसियों नौजवानों को हाईकिंग से परीचित करवाया। ग़ैरमामूली संकलप रखने वाले इन्सान थे। कहते हैं कि मैंने एक बार उनसे पूछा कि क्या आपको हाईकिंग करते हुए डर नहीं लगता? कहा कि लगता है और मेरी फ़ैमिली भी इस को नापसंद करती थी लेकिन मैंने इस का हल यह निकाला कि मैंने ख़लीफ़-ए-वक़्त से मुलाक़ात की। मुझ से यह मिले। और सोचा कि उनके सामने यह तजवीज़ पेश करूँ। यदि तो उन्होंने आज्ञा दे दी। यदि मेरी तरफ़ से उनको इजाज़त मिल गई तो फिर कहते हैं मैंने इरादा किया है कि मैं सात महाद्वीपों की चोटियों को पार करके उन पर अहमदियत का झंडा लहराऊँगा। उन्होंने बताया कि उन्हें ख़ौफ़ था कि मैं कहीं उनको मना न कर दूं परन्तु मैंने उन्हें कहा कि यदि जा सकते हो तो झंडे गाड़ दो। तो अब मैं इंशाअल्लाह ऐसा ही करूँगा। तो इस नौजवान ने फिर कभी मुड़ कर वापस नहीं देखा और इस महान उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए अनथक मेहनत की और एक के बाद दूसरी चोटी पार करते गए। मरहूम को संसार की सबसे बड़ी चोटी माउंट ऐवरैस्ट पर भी अहमदियत का झंडा के लहराने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। यह लिखने वाले लिखते हैं कि ख़ाकसार को यह ज्ञान तो नहीं कि उनकी मौत शहादत कहलाई जा सकती है या नहीं लेकिन अपने मुशाहिदे से कह सकता हूँ कि मरहूम में वह जज़्ब-ए-ईमान था जो ऐसे नेक लोगों को ही प्राप्त होता है जो शहादत की इच्छा रखते हों। लेकिन मेरे विचार में यक़ीनन एक नेक उद्देश्य और जज़्बे के साथ उन्होंने इस्लाम और अहमदियत और ख़ुदा तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) का पैग़ाम पहुंचाने की कोशिश की है और इस में सफ़ल भी हुए और इस उद्देश्य के सफ़र में अल्लाह तआला के हुज़ूर भी हाज़िर हुए। उन्होंने यक़ीनन शहादत का दर्जा पाया होगा। अल्लाह तआला से दुआ भी है कि अल्लाह तआला उन्हें शहादत का दर्जा अता फ़रमाए और शुहदा में शामिल फ़रमाए।

उनके पिता आदरणीय ख़ादिम हुसैन वड़ायच साहिब ने बताया कि हमें नज़र आ रहा था कि हमारा यह बेटा आगे बढ़ता जा रहा है और एक पहाड़ के बाद दूसरे पहाड़ पर चढ़ रहा है। उसने भी पीछे मुड़ कर नहीं देखा। मेरे दोस्त मेरे से पूछा करते थे कि आप उनको रोकते क्यों नहीं हैं। यह बहुत ख़तरनाक शौक़ है। मैं उत्तर दिया करता था कि मेरे रोकने से भी यह नहीं रुकेगा क्योंकि उस के अंदर एक जज़बा है कि मैंने जमाअत का झंडा संसार की हर ऊंची जगह पर लहराना है और अल्लाह तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) का पैग़ाम देना है।

एक दोस्त लिखते हैं कि ख़ाकसार ने एक बार सदर साहिब से पूछा कि जब आप पहाड़ों पर चढ़ते हैं तो अपने आपको motivate करने के लिए फ़ोन पर किया सुनते हैं तो सदर साहिब ने मुझे बताया कि मैंने हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पुस्तकें डाउन लोड (download) की हैं और सफ़र में उनको सुनता हूँ। इस तरह कहते हैं मैंने सदर साहिब से एक मर्तबा पूछा कि इतनी ऊंचाई पर और ठंड में अपनी इबादत किस तरह करते हैं तो उन्होंने कहा कि मुरब्बी साहिब मुझे पहाड़ों पर इबादत करने का बहुत मज़ा आता है। मेरे दिल में यह विचार गुज़रता है कि अल्लाह तआला के नबी भी पहाड़ों पर एकान्त वास में संसार के शोर से दूर जा कर इबादत किया करते थे। कहते हैं मुझे अब्दुल वहीद वड़ायच साहिब ने बताया, एक सफ़र का वाक़िया सुनाया कि एक मर्तबा देनाली (Denali) पहाड़ पर जो कि नॉर्थ अलास्का में है और संसार का सबसे ठंडा पहाड़ है इस पर चढ़ने के दौरान आपकी शहादत की उंगली जम गई जो फ़रीज़ हो जाती हैं और ज़ख़म हो गया। यह बिलकुल जम गई थी। और जिस्म का एक हिस्सा ही नहीं रहा था जब आपने डाक्टर को वह ज़ख़म दिखाया, तो डाक्टर ने कहा कि इस को हमें फ़ौरी तौर पर काटना पड़ेगा यह बेकार हो गई है। सदर साहिब ने उत्तर दिया कि यह शहादत की उंगली है। इस के साथ हम नमाज़ में अल्लाह तआला की वहदानियत की गवाही देते हैं। मैं इस उंगली को हरगिज़ नहीं कटाऊं गा। इस के बाद अल्लाह तआला ने फ़ज़ल फ़रमाया और फिर ऐसा हुआ कि दुआओं से वह उंगली मुकम्मल तौर पर ठीक गई।

अल्लाह तआला उनके बच्चों को भी उनकी नेकियां जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। जो उनकी ख़ूबियां लोगों ने वर्णन की हैं और मैंने भी जो उनमें देखी हैं वह इस से बहुत बढ़कर इन ख़ूबियों में थे। ख़िलाफ़त के हर हुक्म पर लब्बैक कहने वाले, केवल बातें करने वाले नहीं बल्कि वफ़ा और इख़लास में बढ़े हुए थे और बढ़ते चले जाने की कोशिश करते थे। ऐसे लोगों में से थे जिनके जाने से कमी पैदा हो जाता है। बहरहाल जैसा कि मैंने कहा अल्लाह तआला के दीन और उस की वहदानियत का झंडा हर ऊंची जगह पर गाड़ना उनका उद्देश्य था जिसमें वह सफ़ल हुए। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। उनके दर्जात बुलंद फ़रमाए।

दूसरा वर्णन आदरणीया अम्तुल नूर साहिबा का है जो डाक्टर अब्दुल मालिक शमीम साहिब की पत्नी थीं और साहबज़ादी अम्तुल रशीद बेग़म साहिबा और मियां अबदुर्रहीम साहिब की बेटी थीं। 15 जून को वाशिंगटन में उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ख़ुदा के फ़ज़ल से मूसिया थीं। आप हज़रत-ए-अक़दस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की पड़ नवासी और इसी तरह नन्हियाल की तरफ़ से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह अव्वल रज़ियल्लाहु अन्हो की पड़ नवासी भी थीं। हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हु और हज़रत सय्यदा अम्तुल हई साहिबा की नवासी, सहाबी हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम हज़रत प्रोफ़ैसर अली अहमद साहिब आफ़ बिहार की पौती थीं। जैसा कि मैंने बताया उनके मियां डाक्टर अब्दुल मालिक शमीम साहिब थे जो मौलवी अब्दुल बाक़ी साहिब के बेटे थे। अल्लाह तआला ने उन्हें दो बेटियों से नवाज़ा। उनके निकाह के ख़ुतबा में हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह सालिस रहमहुल्लाह तआला ने क़ुरआन-ए-करीम की आयात जो निकाह में तिलावत की जाती हैं वो पढ़ने के बाद फ़रमाया कि इन आयात में जो निकाह के अवसर पर पढ़ी जाती हैं एक बात यह भी वर्णन हुई है कि इस्लाहे आमल के लिए सच्चाई का होना आवश्यक है। अधिकतर तकालीफ़ और परेशानियाँ कुकर्मों के परिणाम में पैदा होती हैं और जहां तक आपस के सम्बन्धात का सम्बन्ध है कुकर्मों की वजह सच्चाई का न होना है। यदि साफ़ और सीधी मोमिनाना बात की जाए तो किसी ग़लतफ़हमी की सम्भावना नहीं रहती और किसी बदमज़गी और परेशानी का ख़तरा नहीं रहता। अल्लाह तआला हम सभी को अच्छे कर्म बजा लाने की तौफ़ीक़ अता करे और हम सब के आमाल की इस्लाह के सामान पैदा करे और हमें सच्चाई की ऐसी आदत हो जाए कि यह वस्तु हमारे लिए एक तुर्रा इमतियाज़ बन जाए। फिर उनके साथ पाँच छ: और भी निकाह हुए थे, उनके बारे में आपने फ़रमाया कि एक निकाह तो रिश्ता के लिहाज़ से और प्यार के सम्बन्ध के परिणाम में मेरी अपनी बच्ची का है। यह बच्ची मियां अबदुर्रहीम साहिब और मेरी छोटी बहन अम्तुल रशीद बेग़म की बच्ची अम्तुल नूर है जिनका निकाह डाक्टर अब्दुल मालिक शमीम के साथ हो रहा है जो मौलवी अब्दुल बाक़ी साहिब के बेटे हैं। फिर आपने फ़रमाया कि अल्लाह तआला से दुआ है कि इस रिश्ता को भी और अन्य पाँच रिश्तों को भी अल्लाह तआला अपनी रहमत से बहुत सी ख़ुशियों का वारिस बनाए हर दो लोगों के लिए भी और अहमदियत के लिए भी। असल नीयत तो इस्लाम की भलाई की होनी चाहीए। अहमदियत ने एक लंबे अरसा की जद्द-ओ-जहद के बाद ग़लबा इस्लाम की राह में अंतिम और असीमित सफलता प्राप्त करनी है इसलिए एक के बाद दूसरी नसल का सही तर्बीयत पाना और उनका सही विचारधार का हामिल होना आवश्यक है। यदि अल्लाह तआला की रहमत शामिल-ए-हाल न हो तो इन्सान की सारी कोशिशें नाकारा और बेकार और बिना परिणाम के हैं। अत: हम दुआ करते हैं कि इन रिश्तों में से और जो रिश्ते जमाअत के अंदर हो चुके हैं या आगे होने वाले हैं उन रिश्तों के परिणाम में भी अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस्लाम की मज़बूती और इस्लाम के इस्तेहकाम के सामान पैदा हों।

(उद्धरित ख़ुतबात नासिर भाग 10 पृष्ठ 478-479)

साहबज़ादी अम्तुल नूर साहिबा को जमाअती ख़िदमात की भी तौफ़ीक़ मिली। नैशनल सैक्रेटरी तर्बीयत अमरीका रहें, नैशनल नायब सदर अमरीका रहें, लोकल सदर लजना वाशिंगटन रहें और विभिन्न कमेटियों की मैंबर रहीं। उनकी बड़ी बेटी अम्तुल मुजीब कहती हैं कि सदैव दीन को दुनिया पर प्राथमिकता दी। लोगों के लिए बेहद हमदर्द थीं। अम्मी यदि किसी की सहायता कर सकतीं तो ग़ैरमामूली तौर पर सहायता किया करती थीं। अपनी इबादत का बहुत ज़्यादा ध्यान रखने वाली थीं। पांचों समय की नमाज़ों के अतिरिक्त कहती हैं जब भी मैंने देखा रोज़ाना कभी भी रात को आँख खुली तो उनको तहज्जुद पढ़ते हुए देखा। अम्तुल नूर साहिबा के पति काफ़ी अरसा हुआ एक ऐक्सिडन्ट में फ़ौत हो गए थे। बेटी कहती है कि हमारे पिता की वफ़ात के बाद बीस वर्ष विधवा में गुज़ारे। इस हालत में भी उन्होंने अल्लाह पर

कमाल दर्जा का तवक्कुल किया। शुक्रगुज़ारी का पहलू बहुत नुमायां था। कहती थीं कि अल्लाह के एहसानात और करम हम पर बहुत ज़्यादा हैं। मैंने यह बात सदैव उनके मुँह से सुनी कि अल्लाह ने वादा किया है कि यदि शुक्र करोगे तो मैं ज़्यादा दूँगा इसलिए सदैव मेरे शुक्रगुज़ार बनो। दिल को खुला और कुशादा रखना, मेहमान-नवाज़ी करना। लोगों के लिए हक़ीक़ी हमदर्दी, सिला रहिमी (दया) की खूबियों का इज़हार बहुत ज़्यादा था। कहती हैं अपनी माँ के मुँह से मैंने बेशुमार बार हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का यह जुमला सुना है कि सिला रहिमी (दया) यह नहीं है कि कोई तुमसे सिला रहिमी (दया) करे तो तुम सिला रहिमी (दया) करो। सिला रहिमी (दया) यह है कि वह तुमसे क़ता रहमी (संबंध विच्छेद) करे और तुम उस से सिला रहिमी (दया) करो। अपने हर रिश्ता और सम्बन्ध में मैं ने अम्मी में यह विशेषता देखी है जो हर किसी में विशेषता ढूंढती थीं। रहमी रिश्तों और जमाअत के लोगों का भी और पड़ोसियों का भी ख्याल रखने वाली थीं। कोई नया मेहमान मस्जिद में आता तो उसे ढूंढती थीं और फिर उस के साथ बैठ के बातें करती थीं और उस को ख़ुश-आमदीद (स्वागतम) कहती थीं। बेशुमार लोगों ने कहा है कि वह मुहब्बत करने वाला वजूद थीं। उनकी दूसरी बेटी ने भी लिखा है कि जमाअत के लोगों, विशेषता नौमुबाईन के साथ बहुत ज़्यादा मुहब्बत का सम्बन्ध था और लोगों ने भी उनसे बहुत प्यार किया। हर इन्सान की सहायता करना चाहती थीं। यह फ़िक्र होती थी कि यह न हो कि वह किसी से मिलीं और कोई आवश्यक हो और वह उसे पूरा न कर सकें। अम्तुल नूर साहिबा की बड़ी बहन अम्तुल बसीर साहिबा लिखती हैं कि सिस्टर शकोरा एक अफ्रीकन अमरीकन महिला थीं। यह जब हज पर गईं तो उन्होंने स्वप्न में देखा कि नोशी का घर अर्थात अम्तुल नूर साहिबा का घर मक्का में है। उनको घर में नोशी कहते थे। जब सिस्टर शकोरा उनके पास आ गईं तो उन्होंने कहा कि इस से यही मुराद है कि आप मेरे पास आ गई हैं और मैं आपकी ख़िदमत कर रही हूँ। उनकी बहन अम्तुल बसीर साहिबा लिखती हैं कि अठारह वर्ष सिस्टर शकोरा जो अफ्रीकन अमरीकन थीं नोशी के पास रहीं। आठ वर्ष तो बिलकुल ही बिस्तर पर थीं, नज़र भी चली गई थी और नोशी ने बहुत ही विचार रखा। नमाज़ें भी उनको पढ़ाती थीं क्योंकि वह भूल जाती थीं। मैंने भी देखा है कि सिस्टर शकोरा का बड़ा ख्याल रखती थीं। जब मैं अमरीका गया हूँ तो स्वयं व्हील चेयर पर बिठा कर उन्हें मेरे से मिलाने के लिए भी ले के आई हैं और सिस्टर शकोरा ने भी उनकी ख़िदमत की बड़ी थीं।

तब्लीग़ का शौक़ था। किसी न किसी रंग में जमाअत के सम्बन्ध में बताने की कोशिश करतीं। कोई पूछ लेता कि पाकिस्तान में किस जगह से आई हैं तो सदैव रब्वाह का नाम लेतीं और फिर आगे बात शुरू हो जाती। यहूदी मज़हब की एक फ़ैमिली को अहमदियत क़बूल करने की सआदत नसीब हुई थी। इस ख़ानदान में एक महिला का नाम रुक़य्या असद है वह अमरीका की नैशनल आमिला में भी शामिल रही हैं। वो कहती हैं कि अम्तुल नूर साहिबा का वजूद बहुत प्यारा था जिनसे बहुत से लोग मुस्तफ़ीद हुए। जिसे भी उनकी सोहबत का अवसर उपलब्ध आया वह सब उनकी खूबियों को सराहते हैं। उन्होंने अमली तौर पर अपनी ज़िंदगी इस्लाम अहमदियत के मुताबिक़ गुज़ारी जिसके परिणाम में लोग उनसे मुतास्सिर होते और वह लोगों के लिए उदाहरण थीं। घटनाओं के रूप में और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की तहरीरात की रोशनी में लजना की तर्बीयत के लिए उन्होंने अपने आपको वक़्फ़ किया हुआ था। उन्होंने हर प्रोग्राम में शमूलीयत इख़तियार की और रज़ाकाराना तौर पर सदैव ख़िदमात प्रदान कीं। सब्र, इस्तिक़ामत और अज़म के साथ अपनी मुश्किलात और परेशानीयों का सामना किया और इस हवाले से वह दूसरों के लिए उदाहरण थीं। मुहब्बत और इख़लास के द्वारा उन्होंने तब्लीग़ का काम किया और नए मेहमानों का ख्याल रखने में सबसे अव्वल दर्जा पर थीं। नौजवान महिलों और बूढ़ी महिलाओं दोनों के लिए अच्छा उदाहरण थीं। यह महिला लिखती हैं कि जैसे जैसे में बूढी हो रही हूँ, वैसे वैसे उनकी इज़्ज़त मेरे दिल में बढ़ती जा रही है। फिर लिखती हैं कि हम कहते हैं कि हमें ख़िदमत-ए-ख़लक़ करनी चाहिए। ग़रीबों और ज़रूरतमंदों का ख्याल रखना चाहिए जबकि आंटी नोशी ने ग़ैर रिश्तेदार लोगों की ख़िदमत के लिए कई वर्षों से अपनी ज़ात के लिए वक़्त ख़त्म किया हुआ था अर्थात अपना वक़्त अपने लिए कोई वक़्त नहीं था, ख़िदमत करती थीं। इसी तरह कुछ और अहमदी महिलाओं विशेषता अफ्रीकन अमरीकन महिलाओं ने लिखा है कि हमसे उन्होंने बड़ा प्यार का सम्बन्ध रखा और अहमदियत की शिक्षा के बारे में बहुत कुछ हमें बताया। अल्लाह तआला उनकी औलाद को भी सदैव उनकी नेकियां जारी रखने और ख़िलाफ़त से जुड़े रहने की तौफ़ीक़ दे। ख़िलाफ़त के साथ उन्होंने वफ़ा का रिश्ता निभाया है। मैंने तो यह देखा है। अपने साथ भी मैंने देखा कि कामिल इताअत और आजिज़ी का उदाहरण उन्होंने दिखाया है। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का फ़रमाए।

अगला वर्णन आदरणीया बिसमिल्लाह बेग़म साहिबा पत्नी आदरणीय नासिर अहमद ख़ान साहब बहादुर शेर साबिक़ अफ़्सर हिफ़ाज़त-ए-ख़ास का है जिनकी जर्मनी में 14 जून को 84 वर्ष की आयु में वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। उनके ख़ानदान में अहमदियत उनके पिता हज़रत चौधरी मज़हरुल-हक़ ख़ान साहब काठगढ़ी के द्वारा आई थी। क़ादियान के बोर्डिंग स्कूल में भी उन्हें काम करने की सआदत नसीब हुई और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने उन्हें अपना एक कुर्ता बतौर तबर्रुक प्रदान फ़रमाया था। उनकी पाँच बेटियां और दो बेटे हैं। उनके एक बेटे महमूद अहमद साहिब मुरब्बी सिलसिला और मिशनरी इंचार्ज हैं। फिजी में अमीर जमाअत भी हैं। महमूद अहमद साहिब जो हमारे मुबल्लिग़ हैं यह लिखते हैं कि आदरणीय पिता की वफ़ात के बाद ज़मीनों से जो भी रक़म आती थी सबसे पहले उस में से चंदा अदा करती थीं। पिता साहिब की पेंशन की रक़म जमा करतीं और किसी इस्तिमाल में न लगातीं। इन पैसों से ताहिर आबाद दक्षिण में मस्जिद बनवाई। उन्होंने हमें सदैव यही नसीहत की कि ख़िलाफ़त के दामन को पकड़े रखना। फिर लिखते हैं कि पिता साहिब की वफ़ात के बाद हम सबको माँ और बाप दोनों की मुहब्बत दी और कभी भी हमें पिता की कमी का एहसास न होने दिया। इस वक़्त में जामिआ अहमदिया के पहले ब्रैज में था। मुझे अधिकतर कहा करती थीं कि तुम दीन के सिपाही हो। तुमने दीन की ख़ातिर वक़्फ़ किया है। जहां ख़लीफ़ा वक़्त खड़ा कर दे वहीं खड़े हो जाना और आख़िर तक इसी बात को दुहराती रहीं। लिखते हैं कि इबतिदा में हमारे गांव से केवल पिता साहिब ही रब्वाह आकर आबाद हुए इसलिए हमारे समस्त अज़ीज़-ओ-अक़ारिब अधिकतर गांव से रब्वाह आते रहते थे। उनके रहने खाने का बड़ी ख़ुशी से इंतिज़ाम किया करतीं और सफ़ैद पोशी के साथ अपनी हिम्मत से बढ़कर मेहमान-नवाज़ी करती थीं। पड़ोसियों के हुक़ूक़ का ख्याल रखना आपको बख़ूबी आता था। मेरे क्लास फ़ैलोज़ को भी सदैव अपने बच्चों की तरह समझा। अधिकतर कहतीं कि जो होस्टल में रहने वाले बच्चे हैं, जो बाहर के मुल्कों से आए हुए हैं उनको घर ले आया करो ताकि उनका जामिआ में दिल लगा रहे। कहते हैं पिताा आदरणीया की शफ़क़त अधिकतर जामिआ के विद्यार्थियों को मिलती रही जिसके कई मुर्बियाँन गवाह हैं। माँ की इस शफ़क़त में पाकिस्तान के अतिरिक्त इंडोनेशिया और अफ्रीकन देशों के विद्यार्थी भी शामिल हैं। कहते हैं कि उनके पास जितने पैसे होते वह बांट देती थीं या चंदा में दे देती थीं परन्तु किसी में हिम्मत न थी कि उनसे कह सके कि कुछ अपने पास भी रखें। मुरब्बी साहिब उनके जनाज़े में मैदान-ए-अमल में होने की वजह से जैसा कि बताया फिजी में मिशनरी इंचार्ज और अमीर हैं, शरीक नहीं हो सके। अल्लाह तआला उन्हें भी सब्र और सुकून अता फ़रमाए और उनकी बाक़ी औलाद को भी सब्र अता फ़रमाए और उनकी नेकियों को जारी रखने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए। मरहूमा से मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए।

अगला वर्णन कर्नल जावेद रुशदी साहिब का है जो चौधरी अब्दुल ग़नी रुशदी साहिब रावलपिंडी के बेटे थे। कुछ अरसा हुआ उनकी वफ़ात हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़ल से मरहूम मूसी थे। फ़ौज से रिटायरमैंट के बाद हर समय जमाअती ख़िदमात में मसरूफ़ रहे और सैक्रेटरी शिक्षा, सैक्रेटरी वक़्फ़ जदीद, सैक्रेटरी रिश्ता नाता के अतिरिक्त हलक़ा के सैक्रेटरी वसाया के तौर पर ख़िदमत की तौफ़ीक़ पाई। तीन बार सदर हलक़ा सैटेलाइट टाउन रावलपिंडी भी रहे। बहुत दुआ करने वाले इन्सान थे। लोगों की ख़ामोशी से माली सहायता किया करते थे। स्वभाव हमदर्दाना था। रिश्तेदारों, पड़ोसियों और अन्य लोगों की सदैव मुश्किल हालात में सहायता और राहनुमाई करते थे। एक अच्छे मुंतज़िम और मुआमला फहम इन्सान थे। अल्लाह तआला उनसे मग़फ़िरत और रहम का सुलूक फ़रमाए। इन सब के जनाज़े नमाज़ के बाद इंशा अल्लाह अदा करूँगा।

☆ ☆ ☆ ☆

## हदीस नबवी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम

**खड़े होकर नमाज़ पढ़ो और अगर खड़े होकर संभव न होतो बैठ कर और अगर बैठ कर भी संभव न हो तो पहलु के बल लेट कर ही सही।**

## तालिबे दुआ

**Sohail Ahmad Nasir and Family**

Jamaat Ahmadiyya Adra,Dist: Puruliya. West Bengal

# सय्यदना हज़रत अमीरुल मोमिनीन ख़लीफतुल मसीह अलख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बेनस्त्ररेहिल अज़ीज़ की यूरोप की यात्रा, मई जून 2015 ई (भाग-22)

## करोशीन और जर्मन महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाह तआला से इंटरव्यू

(रिपोर्ट: अब्दुल माजिद ताहिर, एडिशनल वकीलुत्तबशीर लंदन)
(अनुवादक: सय्यद मुहयुद्दीन फ़रीद)

**करोशीन और जर्मन**
**महिला लेखकों का हुज़ूर अनवर से इंटरव्यू (शेष.....)**

इंटरव्यू लेने वाली महिला ने कहा कि मेरा प्रश्न है कि आपने एक मर्तबा कहा था कि जिन लोगों को सांप्रदायिकता की ओर लेकर जाया जा रहा है उन्हें आरोपी ठहराना चाहिए न कि उनून लोगों को जो उन्हें सांप्रदायिकता की ओर लेकर जा रहे हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मैंने तो यह कभी नहीं कहा। बल्कि मैंने तो कहा था कि वह लोग जो अपनी बद आमालियों के कारण से उन नौजवानों का शिकार कर रहे हैं वह असल मुजरिम हैं न कि वह जो उनके शिकार में फंस जाते हैं। बल्कि उनमें से कुछ तो मासूम होते हैं और तथाकथित मौलवी उन्हें ग़लत रस्ते पर चला रहे होते हैं।

औरत ने प्रश्न किया कि इस सूरत में जमाअत अहमदिया क्या करती है।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हम जो कुछ कर सकते हैं करते हैं। देखें दो चीज़ें हैं। एक यह कि हम साधारणत: क्या कर सकते हैं? तो इस सिलसिला में हम प्यार, मुहब्बत और आपसी प्रेम की तब्लीग़ करते हैं जो कि इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा है। लोगों को बताते हैं कि चरमपंथी की ओर जाने के बजाय उन्हें इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं की पैरवी करनी चाहिए। दूसरी चीज़ हमारी अपनी नौजवान नसल से सम्बन्ध रखती है तो मेरा नहीं विचार कि आप कभी भी किसी अहमदी नौजवान को उन लोगों का निशाना बनते हुए देखेंगी या ये देखेंगी कि वह उन मौलवियों के कारण से चरमपंथी बने हों।

इसी महिला ने प्रश्न किया कि अहमदी नौजवानों के अतिरिक्त आप दूसरों के लिए क्या कर सकते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : देखें हम तो केवल तब्लीग़ ही कर सकते हैं। हम मिशनरी आर्गेनाईज़ेशन हैं। हमारी जमाअत का काम ही तब्लीग़ है जो हम कर रहे हैं।

इस के बाद एक करोशीन महिला ने प्रश्न करते हुए कहा कि केवल तब्लीग़ करना तो पर्याप्त नहीं है आप बतौर रुहानी रहनुमा होने के क्या कर सकते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि तब्लीग़ करने के साथ-साथ हम उन समस्त प्लेटफ़ार्मज़ को प्रयोग में लाते हैं जिन तक हमारी पहुंच है। मुझे यदि किसी पार्लियामेंट के सामने बोलने का अवसर मिलता है या कोई ऐसी जगह जहां पढ़े लिखे लोग जमा होते हैं तो मैं हमेशा उन्हें इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा से आगाह करने का प्रयास करता हूँ और आम मुस्लमानों या विशेष नौजवान वर्ग को कहता हूँ कि आप लोग जो कुछ कर रहे हो वे इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा के अनुसार नहीं है। अत: सीमित माध्यम के साथ हम जो कुछ कर सकते हैं कर रहे हैं।

महिला लेखक ने प्रश्न किया कि क्या आप समझते हैं कि भविष्य में जमाअत अहमदिया मज़ीद तरक़्क़ी करेगी और ज़्यादा से ज़्यादा लोग इस से प्रभावित होंगे?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैं तो हमेशा अच्छी आशा रखता हूँ।

लेखक महिला ने प्रश्न किया कि जिस तरह ज़माना आगे चलता जार हा है क्या इसके अनुसार धर्म में भी तबदीलीयां आयेंगी? आपके विचार में क्या धर्म को लोगों के कारण से बदलना चाहिए या फिर लोगों को धर्म के कारण से चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यही बात मैंने अपने ख़ुतबा जुमा में वर्णन की थी कि धर्म लोगों की रहनुमाई करता है। यदि लोग धर्म की रहनुमाई करना शुरू कर दें तो फिर किसी धर्म की आवश्यकता बाक़ी नहीं रहेगी। आजकल जो विभिन्न किस्म की पार्टीयां हैं। सोशलिस्ट पार्टी SDP ग्रीन पार्टी और तरह तरह की पार्टीयां हैं और प्रत्येक पार्टी अपने घोषणापत्र के अनुसार धर्म को ढालेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अत: जमाअत अहमदिया का घोषणापत्र क़ुरआन-ए-करीम है और हमारे लिए यही रहनुमा उसूल है और हम विश्वास रखते हैं कि यह पवित्र किताब समस्त इन्सानियत की रहनुमाई करती है और हम विश्वास रखते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम नाज़िल होने के लगभग पंद्रह सौ वर्ष गुज़र जाने के बाद भी सुरक्षित है। क़ुरआन-ए-करीम की एक आयत है जिस में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाओं और आयात हमेशा के लिए सुरक्षित रहेंगी और आज तक यह बात सच्ची साबित हो रही है। अत: यदि इसी प्रकार ही है तो फिर हमें दूसरों की सहायता लेने या कहीं और देखने की क्या आवश्यकता है। हम लोगों को कहते हैं कि यदि आपका कोई मसला है या आपको क़ुरआन-ए-करीम की आयात समझ नहीं आतीं और आप तथाकथित मुस्लमान उल्मा जिन्हों ने इस्लामी शिक्षाओं को बिगाड़ दिया है उनके माध्यम से ग़लत मार्ग पर चल रहे हैं तो हमारे पास आएं हम आपको सही समझाएँगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

यदि तो आप यह समझती हैं कि इस्लामी शिक्षाओं के अंदर कोई ऐसी चीज़ है जो आजकल के दौर से समानता नहीं रखती तो मुझे बताएं। हाँ यदि कोई ज़ाती इच्छा है तो यह अलग विषय है। परन्तु कोई ऐसी बुनियादी चीज़ बताएं जिसके बारे में आप कहती हों कि आजकल के दौर में इस की सख़्त आवश्यकता है वह क़ुरआन-ए-करीम में उपस्थित है।

औरत ने कहा कि ऐसी कोई चीज़ है तो नहीं परन्तु मैं केवल यह सोचती हूँ कि लोग जिस धर्म पर चलते हैं इस को तबदील क्यों नहीं कर सकते? मेरा विचार से जो लोग किसी धर्म पर चलते हैं उन्हें इस बात का हक़ प्राप्त होना चाहिए कि वह इस में बदलाव कर सकें।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : परन्तु प्रश्न यह है कि किसी किस्म के बदलाव की आवश्यकता ही क्यों है? यदि कोई आर्थिक समस्या है जिस पर क़ुरआन ने रोशनी नहीं डाली, यदि कोई विज्ञान का दृष्टिकोण है जो क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन नहीं हुआ तो ठीक है। इसी तरह यदि आपको कुछ समाजी समस्याओं का सामना है जिनका हल क़ुरआन ने नहीं बताया या यदि आपको घरेलू समस्याओं का सामना है और उनका वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में नहीं है तो फिर ठीक है परन्तु यदि इन समस्त समस्याओं का वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में उपस्थित है और क़ुरआन-ए-करीम ने इन समस्याओं का हल भी वर्णन फ़रमाया हुआ है तो फिर उसको तबदील करने की आवश्यकता ही क्या है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह कोई इन्सान का बनाया हुआ क़ानून नहीं है, किसी देश की पार्लियामेंट का बनाया हुआ क़ानून नहीं है जिस मेंकुछ अरसा बाद बदलाव की आवश्यकता पड़ती हो। अत: जब हमारा यह ईमान है कि यह किताब ख़ुदा तआला की ओर से नाज़िल किया है तो फिर इस में किसी किस्म के बदलाव की आवश्यकता नहीं रहती यहां तक कि इस किताब की इबारत तक में किसी किस्म के बदलाव की आवश्यकता नहीं रहती। केवल बात क़ुरआन-ए-करीम को समझने की है। यदि आप क़ुरआन-ए-करीम को अच्छी तरह समझते हैं तो आप उन्ही आयात से विभिन्न किस्म की अवधारणाओं और विचारों को धारण कर सकते हैं सब आपकी समझ पर है।

इंटरव्यू लेने वाली महिला ने कहा कि मेरा प्रश्न है कि आपने एक मर्तबा कहा था कि जिन लोगों को सांप्रदायिकता की ओर लेकर जाया जा रहा है उन्हें आरोपी ठहराना चाहिए न कि उनून लोगों को जो उन्हें सांप्रदायिकता की ओर लेकर जा रहे हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया :

मैंने तो यह कभी नहीं कहा। बल्कि मैंने तो कहा था कि वह लोग जो अपनी बद आमालियों के कारण से उन नौजवानों का शिकार कर रहे हैं वह असल मुजरिम हैं न कि वह जो उनके शिकार में फंस जाते हैं। बल्कि उनमें से कुछ तो मासूम होते हैं और तथाकथित मौलवी उन्हें ग़लत रस्ते पर चला रहे होते हैं।

**महिलाने प्रश्न किया कि इस सूरत में जमाअत अहमदिया क्या करती है।**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : हम जो कुछ कर सकते हैं करते हैं। देखें दो चीज़ें हैं। एक यह कि हम साधारणत: क्या कर सकते हैं? तो इस सिलसिला में हम प्यार, मुहब्बत और आपसी प्रेम की तब्लीग़ करते

हैं जो कि इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा है। लोगों को बताते हैं कि चरमपंथी की ओर जाने के बजाय उन्हें इस्लाम की वास्तविक शिक्षाओं की पैरवी करनी चाहिए। दूसरी चीज़ हमारी अपनी नौजवान नसल से सम्बन्ध रखती है तो मेरा नहीं विचार कि आप कभी भी किसी अहमदी नौजवान को उन लोगों का निशाना बनते हुए देखेंगी या ये देखेंगी कि वह उन मौलवियों के कारण से चरमपंथी बने हों।

**इसी महिला ने प्रश्न किया कि अहमदी नौजवानों के अतिरिक्त आप दूसरों के लिए क्या कर सकते हैं।**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : देखें हम तो केवल तब्लीग़ ही कर सकते हैं। हम मिशनरी आर्गेनाईज़ेशन हैं। हमारी जमाअत का काम ही तब्लीग़ है जो हम कर रहे हैं।

इस के बाद एक करोशीन महिला ने प्रश्न करते हुए कहा कि केवल तब्लीग़ करना तो पर्याप्त नहीं है आप बतौर रुहानी रहनुमा होने के क्या कर सकते हैं।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया कि तब्लीग़ करने के साथ-साथ हम उन समस्त प्लेटफ़ार्मज़ को प्रयोग में लाते हैं जिन तक हमारी पहुंच है। मुझे यदि किसी पार्लियामेंट के सामने बोलने का अवसर मिलता है या कोई ऐसी जगह जहां पढ़े लिखे लोग जमा होते हैं तो मैं हमेशा उन्हें इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा से आगाह करने का प्रयास करता हूँ और आम मुस्लमानों या विशेष नौजवान वर्ग को कहता हूँ कि आप लोग जो कुछ कर रहे हो वे इस्लाम की हक़ीक़ी शिक्षा के अनुसार नहीं है। अत: सीमित माध्यम के साथ हम जो कुछ कर सकते हैं कर रहे हैं।

महिला लेखक ने प्रश्न किया कि क्या आप **समझते हैं कि भविष्य में जमाअत अहमदिया मज़ीद प्रगति करेगी और ज़्यादा से ज़्यादा लोग इस से प्रभावित होंगे?**

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : मैं तो हमेशा अच्छी आशा रखता हूँ।

लेखक महिला ने प्रश्न किया कि जिस तरह ज़माना आगे चलता जार हा है क्या इसके अनुसार धर्म में भी तबदीलीयां आयेंगी? आपके विचार में क्या धर्म को लोगों के कारण से बदलना चाहिए या फिर लोगों को धर्म के कारण से चाहिए?

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यही बात मैंने अपने ख़ुतबा जुमा में वर्णन की थी कि धर्म लोगों की रहनुमाई करता है। यदि लोग धर्म की रहनुमाई करना शुरू कर दें तो फिर किसी धर्म की आवश्यकता बाक़ी नहीं रहेगी। आजकल जो विभिन्न किस्म की पार्टीयां हैं। सोशलिस्ट पार्टी SDP ग्रीन पार्टी और तरह तरह की पार्टीयां हैं और प्रत्येक पार्टी अपने घोषणापत्र के अनुसार धर्म को ढालेगी।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : अत: जमाअत अहमदिया का घोषणापत्र क़ुरआन-ए-करीम है और हमारे लिए यही रहनुमा उसूल है और हम विश्वास रखते हैं कि यह पवित्र किताब समस्त इन्सानियत की रहनुमाई करती है और हम विश्वास रखते हैं कि क़ुरआन-ए-करीम नाज़िल होने के लगभग पंद्रह सौ वर्ष गुज़र जाने के बाद भी सुरक्षित है। क़ुरआन-ए-करीम की एक आयत है जिस में ख़ुदा तआला फ़रमाता है कि क़ुरआन-ए-करीम की शिक्षाओं और आयात हमेशा के लिए सुरक्षित रहेंगी और आज तक यह बात सच्ची साबित हो रही है। अत: यदि इसी प्रकार ही है तो फिर हमें दूसरों की सहायता लेने या कहीं और देखने की क्या आवश्यकता है। हम लोगों को कहते हैं कि यदि आपका कोई मसला है या आपको क़ुरआन-ए-करीम की आयात समझ नहीं आतीं और आप तथाकथित मुस्लमान उल्मा जिन्हों ने इस्लामी शिक्षाओं को बिगाड़ दिया है उनके माध्यम से ग़लत मार्ग पर चल रहे हैं तो हमारे पास आएं हम आपको सही समझाएँगे।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया:

यदि तो आप यह समझती हैं कि इस्लामी शिक्षाओं के अंदर कोई ऐसी चीज़ है जो आजकल के दौर से समानता नहीं रखती तो मुझे बताएं। हाँ यदि कोई ज़ाती इच्छा है तो यह अलग विषय है। परन्तु कोई ऐसी बुनियादी चीज़ बताएं जिसके बारे में आप कहती हों कि आजकल के दौर में इस की सख़्त आवश्यकता है वह क़ुरआन-ए-करीम में उपस्थित है।

महिला ने कहा कि ऐसी कोई चीज़ है तो नहीं परन्तु मैं केवल यह सोचती हूँ कि लोग जिस धर्म पर चलते हैं इस को तबदील क्यों नहीं कर सकते? मेरा विचार से जो लोग किसी धर्म पर चलते हैं उन्हें इस बात का हक़ प्राप्त होना चाहिए कि वह इस में बदलाव कर सकें।

इस पर हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : परन्तु प्रश्न यह है कि किसी किस्म के बदलाव की आवश्यकता ही क्यों है? यदि कोई

पृष्ठ 1 का शेष

लाने का अर्थ क्या? परन्तु हम सम्पूर्ण विवेक से (जिसको अल्लाह तआला बेहतर जानता है आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को ख़ातमल् अंबिया विश्वास करते हैं। और ख़ुदा तआला ने हम पर ख़त्म नबुव्वत की हक़ीक़त को ऐसे तौर पर खोल दिया है कि इस इर्फ़ान के शर्बत से जो हमें पिलाया गया है एक विशेष आन्नद पाते हैं जिसका अंदाज़ा कोई नहीं कर सकता केवल उन लोगों के जो इस स्रोत से तृप्त हों

दुनिया की उदाहरणों में से हम ख़त्म नबुव्वत का उदाहरण इस तरह पर दे सकते हैं कि जैसे चांद हिलाल से शुरू होता है और चौदहवीं तिथि पर उसका कमाल हो जाता है जब कि उसे बदर कहा जाता है। इसी तरह पर आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर आकर नबुव्वत कमालात ख़त्म हो गए। जो यह विश्वास रखते हैं कि नबुव्वत ज़बरदस्ती ख़त्म हो गई और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को यूनुस बिन मती पर भी प्राथमिकता नहीं देनी चाहिए। उन्होंने इस वास्तविकता को समझा ही नहीं और आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की महानता और कमालात का कोई ज्ञान ही उनको नहीं है। बावजूद इस समझ की कमज़ोरी और ज्ञान की कमी के हमको कहते हैं कि हम ख़त्म नबुव्वत का इन्कार करने वाले हैं। मैं ऐसे मरीज़ों को क्या कहूं और उन पर क्या अफ़सोस करूँ। यदि उन की यह हालत न हो गई होती और वह इस्लाम की हक़ीक़त से सम्पूर्ण रूप से दूर न जा पड़े होते, तो फिर मेरे आने की आवश्यकता क्या थी? इन लोगों की ईमानी अवस्थाएं बहुत कमज़ोर हो गई हैं और वे इस्लाम के अभिप्राय और उद्देश्य से अज्ञान हैं; वर्ना कोई कारण नहीं हो सकती थी कि वे सच्चों से शत्रुता करते जिसका नतीजा काफ़िर बना देता है।

(मल्फ़ूज़ात भाग 1 पृष्ठ 311 से 313 प्रकाशन 2008 क़ादियान)

☆ ☆ ☆ ☆

आर्थिक समस्या है जिस पर क़ुरआन ने रोशनी नहीं डाली, यदि कोई विज्ञान का दृष्टिकोण है जो क़ुरआन-ए-करीम में वर्णन नहीं हुआ तो ठीक है। इसी तरह यदि आपको कुछ समाजी समस्याओं का सामना है जिनका हल क़ुरआन ने नहीं बताया या यदि आपको घरेलू समस्याओं का सामना है और उनका वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में नहीं है तो फिर ठीक है परन्तु यदि इन समस्त समस्याओं का वर्णन क़ुरआन-ए-करीम में उपस्थित है और क़ुरआन-ए-करीम ने इन समस्याओं का हल भी वर्णन फ़रमाया हुआ है तो फिर उसको तबदील करने की आवश्यकता ही क्या है।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया : यह कोई इन्सान का बनाया हुआ क़ानून नहीं है, किसी देश की पार्लियामेंट का बनाया हुआ क़ानून नहीं है जिस मेंकुछ अरसा बाद बदलाव की आवश्यकता पड़ती हो। अत: जब हमारा यह ईमान है कि यह किताब ख़ुदा तआला की ओर से नाज़िल किया है तो फिर इस में किसी किस्म के बदलाव की आवश्यकता नहीं रहती यहां तक कि इस किताब की इबारत तक में किसी किस्म के बदलाव की आवश्यकता नहीं रहती। केवल बात क़ुरआन-ए-करीम को समझने की है। यदि आप क़ुरआन-ए-करीम को अच्छी तरह समझते हैं तो आप उन्ही आयात से विभिन्न किस्म की अवधारणाओं और विचारों को धारण कर सकते हैं सब आपकी समझ पर है।

महिला ने कहा कि मेरा एक और प्रश्न है कि आपने अपनी तक़रीर में वर्णन किया था कि यूरोप के लोग जो धर्म से दूर हैं वे संतुष्ट नहीं हैं और अप्रसन्न हैं। परन्तु मैं स्वयं धर्म पर अनुकरण नहीं करती परन्तु मैं तो प्रत्येक दृष्टि से संतुष्ट हूँ।

हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने इस के उत्तर में फ़रमाया : मैंने यह नहीं कहा था कि सौ प्रतिशत लोग ही ऐसे हैं यदि आप विज्ञान की लेबोरेटरी में कोई टैस्ट करते हैं और इस का परिणाम 75 प्रतिशत सकारात्मक निकलता है तो आप कहते हैं कि सकारात्मक परिणाम निकला है। बल्कि कभी कभी तो 65 प्रतिशत परिणाम प्राप्त कर के ही कहते हैं कि बहुत ही ख़ुशकुन रिज़ल्ट सामने आया है। अत: मैंने इसी के पेश-ए-नज़र कहा था कि यूरोप के लोग संतुष्ट नहीं हैं जिसके कारण से निराशा का शिकार होते हैं। आप स्वयं प्रत्येक जगह निराशा देख सकती हैं। यदि आपको मुकम्मल तौर पर दिल्ली सुकून प्राप्त है तो ठीक है परन्तु यदि आप कभी कबार यह सोचती हैं कि मेरी अमुक अमुक इच्छा पूरी नहीं हुई तो आप कैसे कह सकती हैं कि आपको मुकम्मल संतुष्टि प्राप्त है। मेरा तो यह कहना है कि ख़ुदकुशी करने वालों की संख्या में इज़ाफ़ा होता जा रहा है अतिरिक्त इस के कि पश्चिमी देशों की आर्थिक हालत कुछ अफ्रीकन और एशीयन देशों से कहीं ज़्यादा बेहतर है। मेरा कहने का यही अर्थ था। (शेष.....)

☆ ☆ ☆ ☆

# Virtual क्लास

## मज्लिस इत्फालुल् अहमदिया कैनेडा की हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ के साथ पहली Virtual क्लास

इस क्लास के बाद मेरा बेटा जमाअत की ख़िदमत के लिए क़दम आगे बढ़ा रहा है, वह भावनाओं से परिपूर्ण है मानों एक नई रूह उस के अंदर आ गई हो

पिछले तीन वर्षों से हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ की बाबरकत सोहबत से मुस्तफ़ीज़ होने के उद्देश्य से मज्लिस इत्फालुल् अहमदिया कैनेडा के मैंबरान पर आधारित प्रतिनिधि मंडल बर्तानिया उपस्थित होते रहे हैं। अलहमदु लिल्लाह।

लेकिन पिछले वर्ष 2020 में कौवीड की विश्व्यापी महामारी के कारण से यह मुबारक यात्रा स्थगित करनी पड़ी। इस आधार पर इत्फालुल् बहुत मायूस थे लेकिन अल्लाह तआला ने उनकी मायूसी को इस तरह ख़ुशियों में बदल दिया कि हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्त्रिहिल अज़ीज़ ने उन्हें ऑनलाइन मुलाक़ात का सौभाग्य प्रदान फ़रमाया।

15 अगस्त 2020 शनिवार के दिन कैनेडा भर से ख़ुशनसीब इत्फालुल् अपने इमाम की ख़िदमत में हाज़िरी के लिए पीस वेलेज् पहुंचना शुरू हुए। अलहमदु लिल्लाह। एक दूसरे से फ़ासले पर खड़े ये बच्चे जबकि अपने भाईयों से प्रेम के प्रकट के लिए न हाथ मिला सकते हैं और न ही गले मिल सकते हैं लेकिन फिर भी ख़ुश हैं कि हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाक़ात का सौभाग्य प्राप्त कर रहे हैं।

सब इंतिज़ामात मुकम्मल हो चुके थे। इत्फाल समाजी दूरी की एहतियात के साथ अपनी अपनी जगहों पर बैठे दुआओं और इस्तिग़फ़ार में व्यस्त थे कि अचानक प्यारे हुज़ूर की शफ़क़त भरी आवाज़ हमारे कानों से टकराई। सिर उठा कर देखा तो हुज़ूर-ए-अनवर का रोशन और मुनव्वर चेहरा हमारे सामने टी.वी पर मौजूद था। इस लम्हे ऐसा महसूस हुआ कि जैसे हुज़ूर अनवर की बरकत से हमारे पास भी फ़रिश्तों का नुज़ूल हो रहा है और उन फ़रिश्तों ने मानो समस्त इंतिज़ामात अपने हाथ में लेकर उनको पूर्णता तक पहुंचाना शुरू कर दिया है।

हुज़ूर-ए-अनवर को टी.वी पर देखना किसी अहमदी के लिए नई बात नहीं लेकिन आज की मज्लिस इस लिहाज़ से अलग थी कि हुज़ूर कैनेडा में मौजूद अपने ख़ुद्दाम को टेलीविज़न के माध्यम से देखते हुए उनसे सम्बोधित भी हो रहे थे। ख़लीफ़-ए-वक़्त इतिहास में पहली बार किसी virtual मीटिंग को अपनी मौजूदगी से सरफ़राज़ फ़र्मा रहे थे। इस मुलाक़ात के बहुत से लमहात यादगार ठहरे। हुज़ूर अनवर की इत्फाल पर शफ़क़त और इत्फाल की अपने आक़ा से मुहब्बत साफ़ ज़ाहिर थी। मैंने इस लम्हा में इस बात पर अल्लाह तआला का शुक्र अदा किया कि आज मैं जमाअत अहमदिया में शामिल हूँ। अलहमदु लिल्लाह

हमने सोचा कि नज़म को प्रोग्राम में न रखा जाए ताकि इत्फाल को ज़्यादा से ज़्यादा हुज़ूर अनवर से रहनुमाई प्राप्त करने का अवसर उपलब्ध हो सके। लेकिन हमने फिर भी एहतियातन एक तिफ़्ल को नज़म की तैयारी भी करवा रखी थी। जब तिलावत हो चुकी और इस का अनुवाद भी प्रस्तुत हो गया तो हुज़ूर अनवर ने हमसे पूछा कि क्या नज़म का इंतिज़ाम नहीं है? मुझे तो ऐसा लगा मानो किसी ने मुझे झिंझोड़ दिया हो। मैंने हुज़ूर अनवर को उत्तर में अर्ज़ किया कि जी हुज़ूर इंतिज़ाम है।

इस क्लास के लिए ऐवान ताहिर में 162 और बैतुल-इस्लाम में 62 इत्फाल बैठे थे। इसी तरह क्लास के दौरान इन दोनों जगहों पर इत्फाल के अतिरिक्त 20 रज़ाकार (स्वयंसेवक) भी डयूटी पर मौजूद थे।

हुकूमती इंतिज़ामिया की ओर से जारी करदा समस्त हिदायात को दृष्टिगत रखते हुए क्लास के आग़ाज़ पर इत्फाल को अपनी-अपनी जगहों पर बिठाया गया और हर लम्हा Physical Distancing की हिदायात को दृष्टिगत रखा गया। इसी तरह क्लास ख़त्म हो जाने के बाद भी एहतियात के तक़ाज़ों के पेश-ए-नज़र एक-एक कर के इत्फाल को हाल में से बाहर भिजवाया गया।

यह क्लास हुज़ूर अनवर की मुस्कुराहटों और मोहब्बतों से इबारत थी। हम पूरा एक घंटा हुज़ूर अनवर की बाबरकत सोहबत में रहे। हुज़ूर अनवर का इतना वक़्त हमारे लिए निर्धारति करना और हमारे मध्य मौजूद रहना हमारे लिए निहायत ख़ुशी और शरफ़ का कारण था। क्लास के आयोजन से पूर्व एक वह वक़्त था कि इंतिज़ार में वक़्त ही नहीं गुज़रता था और जब क्लास शुरू हो गई तो पता ही नही लगा और एक घंटा मानों पल-भर में गुज़र गया। सबकी यह इच्छा थी कि काश यह क्लास कुछ देर और जारी रहती। लेकिन जो भी वक़्त हमें उपलब्ध आया अल्लाह तआला का इस पर लाख लाख शुक्र है।

दौरान-ए-क्लास तिलावत और नज़म के बाद इत्फालु ने अपने प्यारे आक़ा से प्रश्न पूछ कर विभिन्न विषयों के बारे में मार्गदर्शन प्राप्त किया।

क्लास के बाद इत्फाल के चेहरों से ख़ुशी झलक रही थी। सब का यही कहना था कि हमें ऐसा महसूस हो रहा था कि हुज़ूर अनवर हमारे मध्य मौजूद हैं। संसार के मौजूदा हालात के कारण से यात्रा की पाबंदियों को देखकर हम अल्लाह तआला का शुक्र अदा करते हैं कि हमें हुज़ूर से मुलाक़ात का सौभाग्य नसीब हुआ। हम ख़िलाफ़त जैसी महान नेअमत के लिए ख़ुदा तआला का जितना शुक्र करें कम है। ख़िलाफ़त हर लम्हा और हर क़दम पर हमारे लिए ढाल और हमारे लिए हिफ़ाज़त के सामान पैदा करती है। ख़िलाफ़त से जुड़े रहने से ही हक़ीक़ी ज़िंदगी प्राप्त होती है।

**शामिल होने वालों के विचार**

इस क्लास में शामिल होने वाले इत्फाल ने जिन भावनाओं का प्रकट किया उनमें से कुछ निमंलिखित हैं :

★सलमान काहलों कहते हैं कि जबकि मैं प्रश्न नहीं कर सका लेकिन केवल हुज़ूर के सामने मौजूद होना मेरे लिए ऐसा था जैसे कोई स्वप्न पूरा हो गया अल्लाह तआला हुज़ूर अनवर को सेहत वाली लंबी आयु अता फ़रमाए। आमीन

★इन्तेसार नसरुल्लाह ने कहा कि मैं समझता हूँ कि हुज़ूर का इस क्लास के लिए वक़्त निकालना और इत्फाल के साथ सम्बोधित होना, नाक़ाबिल-ए-यक़ीन बात है। जबकि हुज़ूर अनवर हमारे मध्य नहीं थे, लेकिन इस के अतिरिक्त इस बात का एहसास होता था कि मैं इमाम-ए-वक़्त के सामने मौजूद हूँ। मैं सआदत-मंद रहा कि मुझे हुज़ूर अनवर से प्रश्न करने का भी अवसर मिला। मैं बहुत ख़ुश था और अपने आपको ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि मुझे हुज़ूर से बात करने का अवसर मिला।

★ नूर ग़ालिब अहमद ने बताया कि मैं अपने आपको बहुत ख़ुश-क़िस्मत समझता हूँ कि मैं इस तारीख़ी क्लास का हिस्सा बना। जब मैंने हुज़ूर को देखा तो मेरी आँखें (हुज़ूर के नूर से) रोशन हो गईं, मैं चाहता था कि मैं हुज़ूर के गले लग जाऊं परन्तु इस वबा के कारण से शायद यह फ़िलहाल सम्भव नहीं। मैं चाहता था कि मैं हुज़ूर को आख़िर में अपनी Open Heart Surgery के लिए दुआ के लिए कहूं परन्तु वक़्त ख़त्म हो गया और मैं नहीं कह सका।

★ अताउल हई साहिब कहते हैं मैं सबसे ज़्यादा ख़ुश-क़िस्मत तिफ़्ल हूँ कि मुझे इस क्लास में शामिल होने का अवसर मिला। बराए मेहरबानी इस तरह के और भी प्रोग्राम बनाएँ।

★ सफ़ीर अहमद अली मिर्ज़ा ने अपने भावनाओं का प्रकट कुछ इस तरह किया : अल्हम्दुलिल्ला, यह ऐसे था जैसे मेरा कोई स्वप्न पूरा हो गया हो। मैं सदैव चाहता था कि हुज़ूर के साथ इन क्लासों में शामिल हूँ। मुझे अभी भी यक़ीन नहीं आ रहा कि मुझे हुज़ूर अनवर की मौजूदगी में, उनके सामने नज़म पढ़ने का सौभाग्य मिली। अल्लाह तआला मुंतज़ेमीन, रज़ाकारों औरM.T.A की टीम पर फ़ज़ल करे जिन्हों ने इस को सम्भव बनाया। जज़ाकल्लाह।

इसी तरह माता पिता से मौसूल होने वाले कुछ विचार भी निमंलिखित हैं

★आदरणीया फ़हमीदा मुज़फ़्फ़र साहिबा कहती हैं कि मुझे बहुत ख़ुशी है कि मेरे बेटे को केवल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से इस तारीख़ी प्रोग्राम में शामिल होने का अवसर मिला। मैं मुंतज़मीन के प्रयासों का बहुत धन्यवाद अदा करना चाहती हूँ जिन्हों ने इस प्रोग्राम को सफ़ल बनाया। धन्यवाद ख़ुदा आप को इसका उत्तम प्रतिफल प्रदान करे।

★आदरणीय एजाज़ ख़ान साहब और अम्तुल क़ुद्दूस साहिबा ने कहा कि हमें

**इस्लाम और जमाअत अहमदिया के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें**

**नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :**
1800 103 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web. www.alislam.org, www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.alislam.org/badr

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2020-2022 Vol. 6 Thursday 29 July 2021 Issue No.30

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com

ANNUAL SUBSCRIBTION: Rs. 575/- Per Issue: Rs. 10/- WEIGHT- 20-50 gms/ issue

लगता है जैसे कोई स्वप्न पूरा हो गया हो। हमारा बेटा इस वर्ष UK ट्रिप पर नहीं जा सका लेकिन इस क्लास के कारण से उस को हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में हाज़िर होने और हुज़ूर अनवर के साथ बात करने का अवसर मिल गया। अल्हम्दुलिल्ला

★ आदरणीया सना अहमद साहिबा ने वर्णन किया कि मैं ख़ुदा तआला का बहुत एहसान समझती हूँ कि मेरे बेटे को इस क्लास में शामिल होने का सौभाग्य मिला। मैं बहुत ख़ुश और भावनाओं से परिपूर्ण हूँ। मैं दुआ करती हूँ कि यह वबा जल्द ख़त्म हो और बच्चों को हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में स्वयं शामिल होने का अवसर मिले और वे बरकतों से मुस्तफ़ीद हो सकें। आमीन। जज़ाकल्लाह

★आदरणीय अताउल क़ुद्दूस साहिब ने बताया कि इस क्लास के बाद मेरा बेटा जमाअत की ख़िदमत के लिए क़दम आगे बढ़ा रहा है। वह बहुत भावनाओं से परिपूर्ण है मानो एक नई रूह उस के अंदर आ गई हो।

★आदरणीया अम्तुल हफ़ीज़ हिना मिर्ज़ा साहिबा कहती हैं कि अल्हम्दुलिल्ला, हम ख़ुदा तआला के बहुत मशकूर हैं, ख़ुश भी हैं और ख़ुदा का फ़ज़ल महसूस कर रहे हैं और अभी तक इन बरकात को समेट रहे हैं जो मेरे बेटे को इस अलग प्रोग्राम में शामिल होने के कारण प्राप्त हुए।

मज्लिस इत्फालुल् अहमदिया और मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया के मैंबरान नैशनल आमिला और क्लास के इंतिज़ामात के लिए डयूटी पर निर्धारित रज़ाकार उन की जानिब से भी विचार प्राप्त हुए जो कि निमंलिखित हैं :

★ आदरणीय नस्र सिद्दीक़ी साहिब ने कहा कि यह मेरे लिए बाइस-ए-फ़ख़र बात थी कि मैं इस क्लास का हिस्सा बन सका। अलहमदु लिल्लाह। हुज़ूर अनवर को इत्फालुल् से बात करते हुए देखना मेरे लिए ख़ुशी और सौभाग्य का कारण था।

★आदरणीय नवीदुल इस्लाम साहिब कहते हैं कि हमारी इच्छा है कि हमें इस तरह के मज़ीद अवसर भी उपलब्ध आएं।

★आदरणीय फ़हद चठ्ठा साहिब ने कहा कि अलहमदु लिल्लाह, हमारे लिए यह पूरे वर्ष का एक नुमायां अवसर था हुज़ूर अनवर ने पूरा एक घंटा हमारे लिए निर्धारित किया और हमें महत्वपूर्ण हिदायात से नवाज़ा।

★आदरणीय रूमी साही साहिब कहते हैं कि अल्हम्दुलिल्ला विनीत ख़ुद्दाम की नैशनल आमिला में है, और यह मेरे लिए बहुत बाबरकत बात थी कि में इस क्लास का हिस्सा बना हूँ। ऐसा महसूस हो रहा था कि हुज़ूर अनवर हमारे सामने मौजूद हैं। यह रुहानी लिहाज़ से भी हमारे लिए तरक़्क़ी का कारण बना है। मैं निहायत धन्यवादी हूँ इस क्लास का हिस्सा बनने के लिए।

★आदरणीय तौसीफ़ रिहान साहिब ने बताया कि मुझे बहुत ख़ुशी है कि मुझे हुज़ूर अनवर के साथ क्लास का हिस्सा बनने का शरफ़ प्राप्त हुआ। हुज़ूर अनवर ने इत्फाल के साथ बहुत शफ़क़त का सुलूक फ़रमाया। हुज़ूर अनवर की सोहबत हमारी रूहानियत की तरक़्क़ी का बाइस बनी है। अल्लाह तआला हमें हुज़ूर अनवर की हिदायात पर अमल पैरा होने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाए।

★आदरणीय इफ़्तिख़ार अहमद साहिब ने कहा कि क्लास का माहौल ऐसा ही था जैसे कि हम जिस्मानी तौर पर हुज़ूर अनवर की ख़िदमत में हाज़िर हैं। यू.के से जुड़े समस्त एहसासात और भानाएं वापस आ रही थीं।

(रिपोर्ट : ज़ुबैर अफ़ज़ल, सदर मज्लिस खुद्दामुल अहमदिया कैनेडा)

(धन्यवाद अख़बार अल्फ़ज़ल इंटरनैशनल 21 अगस्त 2020)

## इर्शाद हज़रत अमीरुल मोमिनीन

**"अपनी इबादतों को भी विशेष करें और दुनिया को भी इस्लाम की वास्तविक शिक्षा से अवगत कराएं।"**

**(ख़ुत्बा जुम्अः 17 मई 2019)**

### तालिबे दुआ

**KHALEEL AHMAD**

**S/O LATE HAJI BASHEER AHMAD SB AND FAMILY, JAMAAT AHMADIYYA BIJUPURA, SAHARANPUR (U.P)**

**पृष्ठ 1 का शेष**

कि उनके निकट अल्लाह तआला का ख़याल, ख़ौफ़ और हैरत से पैदा हुआ और शिर्क से तरक़्क़ी करते हुए तौहीद (एकेश्वरवाद) के बिन्दु तक पहुंचा। बज़ाहिर यह मतभेद मामूली ज्ञात होता है परन्तु उसी मतभेद के परिणाम में मज़हब ने कहा कि ख़ुदा तआला ने इन्सान को पैदा किया है और मुवाज़ना मज़ाहिब वालों ने कहा कि इन्सान ने ख़ुदा को पैदा किया है। अर्थात ख़ुदा तआला का विचार इन्सानी दिमाग़ की खोज है और इस की पूर्णता इन्सानी फ़लसफ़े की पूर्णता से है।

इस आयत पर यह प्रश्न उत्पन होता है कि क्या इब्राहीम शिर्क कर सकते थे? यदि नहीं तो उन्होंने यह दुआ क्यों की कि ख़ुदाया मुझे शिर्क से बचा। इस का उत्तर यह है कि इन्सानी शक्तियां दो प्रकार की हैं। एक वह जो ख़िलक़तन उसे अल्लाह तआला ने दी हैं। उनके सम्बन्ध में वह दुआ नहीं करता। उदाहरणता यह नहीं कहता कि ख़ुदाया मेरा एक ही सिर रहे दो न हो जाएं। दूसरी वे शक्तियां हैं जो इन्सान को कअर्थ या प्रयास करने से मिलती हैं। अर्थात वह उन्हें आप तरक़्क़ी कर के प्राप्त करता है। या ख़ुदा तआला की विशेष कृपा दूसरे इन्सानों से अलग करके उसे अता करता है। ऐसी ताक़तों में चूँकि पतन की सम्भावना होती है उन के लिए दुआ जारी रखी जाती है। चाहे अल्लाह तआला का वादा ही क्यों न हो कि वह इस इनाम से उसे शोभित रखेगा। क्योंकि इस दुआ में वास्तव में इस बात का इकरार होता है कि यह नेअमत मेरी ज़ाती नहीं बल्कि ख़ुदा तआला से बतौर इनाम प्राप्त हुई है। इसी उद्देश्य के अंतर्गत अम्बियाँ नबुव्वत के इनामात के सम्बन्ध में भी दुआ में लगे रहते हैं। जैसे हज़रत इब्राहीम की यह दुआ है या रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की दुआ है رَبِّ زِدْنِيْ عِلْمًا इस्तग़फ़ार और तौबा का अनबया से जारी होना है। इन नुक्तों को न समझने की वजह से कुछ लोगों ने अनबया के इस्तग़फ़ार और तौबा से धोखा खाया है और यह समझ लिया है कि मानो वे गुनहगार थे। हालाँकि उनके इस्तग़फ़ार और तौबा के यह अर्थ होते हैं कि जिस पवित्रता के स्थान पर वे हैं वे अल्लाह तआला की तरफ़ से एक मोहब्बत है और उस के जारी रखने के लिए वे दुआ करते हैं क्योंकि उस का तसलसुल अल्लाह तआला के फ़ज़ल से ही होता है।

इसी आधार पर क़ुरआन-ए-करीम में बार-बार وَعَلَى اللّٰهِ فَلْيَتَوَكَّلِ الْمُتَوَكِّلُوْنَ है। अर्थात अतिरिक्त कमाल के इन्सान को अल्लाह तआला पर सहारा रखना चाहीए। क्योंकि वह कमाल ख़ुदा तआला पर सहारे से ही प्राप्त हुआ है। और इस सहारे का इक़रार करते रहना अपने लिए और दूसरों के लिए हिदायत का कारण होता है।

(तफ़सीर कबीर, भाग 3 पृष्ठ 483 प्रकाशन 2010 क़ादियान)

## दरुस्सना क़ादियान (व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र) Ahmadiyya Vocational (technical) training centre, Qadian में दाख़िला शुरू है, कला सीखने के इच्छुक युवा जल्दी करें

समस्त अहमदी नौजवानों की जानकारी के लिए घोषणा की जाती है कि विभाग व्यावसायिक (तकनीकी) प्रशिक्षण केंद्र क़ादियान में दाख़िला शुरू हो गया है। विभाग में इलेक्ट्रीशियन,प्लंबिंग, वेल्डिंग/डीज़ल मिकैनिक Motor vehicle mechanic / AC & refrigerator और कम्पयूटर के एक वर्ष के कोर्स करवाए जाते हैं और सरकारी विभाग NSIC का certificate दिया जाता है। कला सीखने के इच्छुक युवाओं के लिए बेहतरीन अवसर है और जो युवा अपने स्कूल की शिक्षा पूर्ण नहीं कर सके इन कोर्सज़ में दाख़िला लेकर पूर्णता लाभ उठा सकते हैं। क़ादियान से बाहार के अहमदी नौजवानों के लिए जमाअत के प्रशासन के अधीन होस्टल और खाने की भी व्यवस्था है। होस्टल और खाने के खर्चों की कोई फ़ीस नहीं ली जाती है। इच्छुक युवा तुरंत निम्नलिखित नंबरों पर सम्पर्क करें।

फ़ोन नंबर : 9872923363, 9872725895, 8077546198
e-mail : darulsanaat. qadian @gmail. com

**(प्रिंसिपल दरुस्सना क़ादियान)**

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad